पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

जून 2025

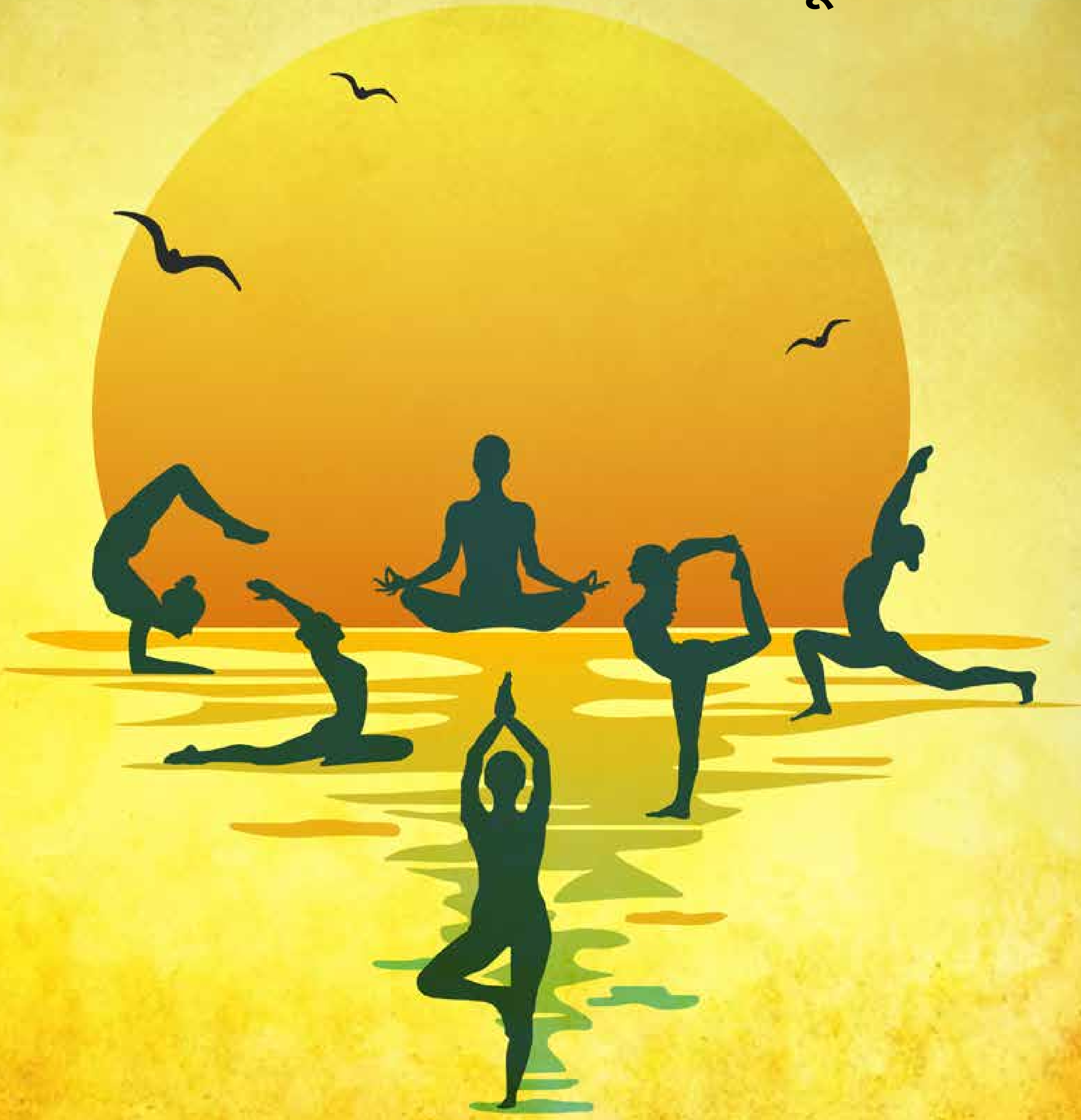

गौरव के क्षण

वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय के तत्वावधान में 12-13 जून, 2025 को मसूरी (उत्तराखंड) में बैंकों/ वित्तीय संस्थाओं/ बीमा कंपनियों तथा विनियामकों के लिए दो दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी सह समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में बैंक को वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए 'क' क्षेत्र के अंतर्गत 'द्वितीय पुरस्कार' प्रदान किया गया। यह पुरस्कार श्री धीरज भास्कर, उप सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग के कर कमलों से बैंक के मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर, आंचलिक प्रबंधक देहरादून श्री अक्षित चौधरी तथा मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा ने प्राप्त किया।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली – 110008

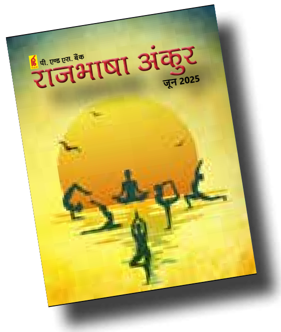

जून, 2025

मुख्य संरक्षक

श्री स्वरूप कुमार साहा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक

श्री रवि मेहरा
कार्यपालक निदेशक

श्री राजीवा
कार्यपालक निदेशक

मुख्य संपादक

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक व प्रकाशक

श्री निखिल शर्मा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक समिति

श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्री बिभाष कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती भारती, प्रबंधक (राजभाषा)

ई-मेल : ho.rajbhasha@psb.co.in
पंजीकरण संख्या : एफ.2 (25) प्रैस.91

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
ए 33/2, साइट-4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
मोबाइल - 98112-69844

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	राजभाषा हिंदी और बोलियां	4-6
5.	गज़ल	7
6.	संसदीय राजभाषा समिति का गुवाहाटी दौरा	8-9
7.	बैंकिंग में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन मापदंड	10-13
8.	हिंदी कार्यशाला	14-15
9.	मेरा गाँव, मेरा देश	16-18
10.	श्री गुरू अर्जुन देव जी - जीवन और उपदेश	19-21
11.	स्थापना दिवस समारोह - 2025	22-23
12.	जिबली कला	24-26
13.	नई शाखाएं	27
14.	संसदीय राजभाषा समिति का देहरादून दौरा	28-29
15.	काव्य-मंजूषा	30
16.	ग्राहक के मुख से	31
17.	राजभाषा पुरस्कार	32-33
18.	बढ़िया है!	34-37
19.	संथाल हुल के शहीदों की शौर्य गाथा	38-40
20.	अंचल कार्यालयों में स्थापना दिवस समारोह	41
21.	भारत में वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक)	42-44

आपकी कलम से

पंजाब एण्ड सिंध बैंक द्वारा प्रकाशित 'राजभाषा अंकुर' का मार्च 2025 अंक, नारी चेतना, सृजनशीलता और सामाजिक प्रतिबद्धता का अद्भुत संगम है। इस अंक में महिलाओं की बहुआयामी भूमिका, उनके संघर्ष, उपलब्धियों और समकालीन विमर्शों को अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य' तथा 'स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान' जैसे आलेख नारी शक्ति के उत्कर्ष और राष्ट्र निर्माण में उनके अविस्मरणीय योगदान को उजागर करते हैं।

'काव्य मंजूषा', 'नारी कविता' और 'मिनी कहानी' खंड इस विशेषांक को भावभूमि, रचनात्मकता और काव्यमयता से सुशोभित करते हैं। यह अंक पाठकों को नारी मन की गहराइयों, सामाजिक यथार्थ और हिंदी भाषा की गरिमा से अवगत कराता है। पंजाब एण्ड सिंध बैंक के संपादक मंडल एवं राजभाषा विभाग को इस उत्कृष्ट और प्रेरणादायक प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

-नितेश कुमार सिन्हा
महाप्रबंधक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का मार्च 2025 अंक प्राप्त हुआ, जिसके लिए आपका धन्यवाद! पत्रिका में प्रकाशित सामग्री हमेशा की तरह आकर्षक एवं प्रेरणादायक लगी। पत्रिका में प्रकाशित विषयों जैसे महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य, स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान, कृत्रिम मेधा और रोजगार, भारतेंदु हरिश्चंद्र, कार्यशील महिलाओं के समक्ष चुनौतियाँ, वर्तमान में राजभाषा हिंदी की प्रासंगिकता, भाषायी विविधता में निहित एकता इत्यादि रचनाओं ने हृदय में विशेष स्थान बनाया, इसके अतिरिक्त काव्य-मंजूषा के अंतर्गत प्रकाशित कविताएं बहुत ही सुंदर लगीं।

पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्रों के माध्यम से बैंक के प्रधान कार्यालय एवं विभिन्न अंचल कार्यालयों में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी मिली। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल/ प्रकाशक को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं!

-किरण शंकर
आंचलिक प्रबंधक
बरेली

बैंक पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का नवीनतम अंक (मार्च- 2025) प्राप्त हुआ- धन्यवाद। इस अंक से पूर्व भी पत्रिका के अंक नियमित रूप से मिल रहे हैं। इस अंक में प्रकाशित लगभग सारी सामग्री अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्धक है, विशेष रूप से लवली गुप्ता का लेख 'कृत्रिम मेधा और रोज़गार' काफी ज्ञानवर्धक व जानकारी से भरपूर है। लेख 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान' तथा 'भारतीय महिलाओं का आर्थिक परिदृश्य' सराहनीय है। पत्रिका में राजभाषा संबंधी समाचारों को जिस ढंग से प्रस्तुत किया गया है उससे बैंक में राजभाषा कार्यान्वियन की स्थिति संतोषजनक प्रतीत होती है।

इतने सुंदर अंक के प्रकाशन के लिए समूचे संपादक मंडल को बधाई व साधुवाद।

-डॉ. चरनजीत सिंह
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

आपकी हिंदी तिमाही पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का मार्च, 2025 अंक प्राप्त हुआ। यह अंक कई रोचक, जीवंत और व्यावहारिक पक्षों को समायोजित किए हुए है।

राजभाषा अंकुर के इस अंक में कविता-हमारी बैंकिंग, आलेख- कृत्रिम मेधा और रोजगार और भारतीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य इत्यादि उल्लेखनीय है। पत्रिका में बैंक की विविध गतिविधियों का सचित्र वर्णन प्रशंसनीय है। पत्रिका का यह अंक पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। आगामी अंकों के प्रकाशन के लिए शुभकामनाओं सहित!

-डॉ. हेमलता
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक, प्रधान कार्यालय कोलकाता

संपादकीय

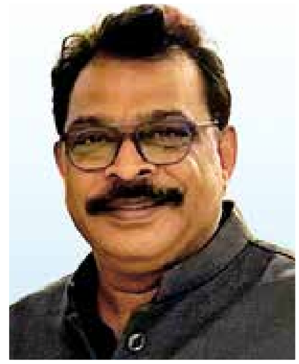

सुधी पाठकगण,

वित्त वर्ष 2025-26 का प्रथम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। 24 जून, 2025 को बैंक ने अत्यंत उत्साह के साथ अपना 118वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यालयों में अरदास, रक्तदान शिविर तथा पौधारोपण भी किया गया। 24 जून, 1908 को डॉ. भाई वीर सिंह जी, सर सुंदर सिंह मजीठिया जी और सरदार तरलोचन सिंह जी ने समाज के निम्न वर्गों के सामाजिक व आर्थिक उत्थान के जिस उद्देश्य से बैंक की स्थापना की थी, बैंक आज तक अपने उन सिद्धांतों के लिए प्रतिबद्ध है।

वित्त वर्ष 2024-25 बैंक के लिए उल्लेखनीय रहा। वित्तीय वर्ष के दौरान बैंक ने ₹2075 करोड़ का परिचालन लाभ और ₹1016 करोड़ का शुद्ध लाभ दर्ज किया। प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र विशेष रूप से कृषि, एमएसएमई और कमज़ोर वर्गों के अंतर्गत ऋण आबंटन में उल्लेखनीय वृद्धि करके बैंक ने समावेशी विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और पुष्ट किया है। कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए जहाँ एक ओर बैंक अपने ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से विभिन्न वर्गों के लोगों को प्रशिक्षित कर रहा है वहीं दूसरी ओर सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए वित्त वर्ष 2024-25 में दो सौ से अधिक जागरूकता शिविर आयोजित किए गए। वित्तीय समावेशन मिशन के अंतर्गत मार्च, 2025 तक 26.56 लाख प्रधानमंत्री जन-धन खाते खोलकर बैंक ने उचित लागत पर आर्थिक रूप से अक्षम परिवारों को बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने का अपना प्रयास जारी रखा है। असाधारण ग्राहक सेवा की संस्कृति ही हमारे बैंक की प्रगति का मूल आधार है।

बैंक ने अपनी पहुंच बढ़ाने और बाज़ार में अपनी पैठ विस्तृत करने के लिए आकांक्षी ज़िलों और अल्प सेवा प्राप्त क्षेत्रों में शाखा नेटवर्क का विस्तार किया है। इसके अंतर्गत बैंक ने सुदूर पूर्वोत्तर में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात तथा उत्तर में लद्दाख से दक्षिण भारत के केरल तक अपनी नवीन शाखाओं का शुभारंभ किया है जिनमें लेह, थूथुकुड़ी, त्रिशूर, माधापर, सोनापुर, धर्मनगर, मोरनहाट, रंगपो आदि शाखाएं प्रमुख हैं। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी दृढ़ संकल्प, कार्मिकों की विकासोन्मुख मानसिकता और सामूहिक प्रयास के साथ हमारा बैंक निरंतर लाभार्जन की स्थिति को अनुरक्षित रखेगा।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा बैंकों/ वित्तीय संस्थाओं/ बीमा कंपनियों तथा विनियामकों की श्रेणी में बैंक को वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए 'क' क्षेत्र के अंतर्गत 'द्वितीय पुरस्कार' प्रदान किया गया है। शीर्ष नेतृत्व के साथ-साथ बैंक के समस्त कार्मिक भी इसके लिए बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के इस अंक में अनेक सेवानिवृत्त कार्मिकों के लेख प्रकाशित किए गए हैं। बैंक के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सरदार आर. पी. सिंह जी की ग़ज़ल आपको इस अंक में पढ़ने को मिलेगी। आपसे अनुरोध है कि पत्रिका के इस अंक के लिए हमें अपनी प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करें।

(गजराज देवी सिंह ठाकुर)
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

राजभाषा हिंदी और बोलियां

सोनिका सांगवान

भारतवर्ष में जितनी विविधता है, उतनी शायद विश्व के किसी भी देश को प्राप्त नहीं है। प्रकृति भी यहाँ अपने भिन्न-भिन्न स्वरूप में विद्यमान है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक प्रत्येक क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों की अपनी विशेषता है तथा मौसम के विभिन्न रूप के आधार पर यहाँ त्यौहार के नाम और शैली में भी विविधता है। संस्कृति और भाषाई विविधता हमारे देश की धरोहर है। विविधताओं से परिपूर्ण इस देश में विविधताओं का एक रूप इसकी भाषाओं और बोलियों में भी समाहित है। इन सबसे परे देश के अलग-अलग प्रदेशों में बोले जानी वाली भाषाओं में भी भिन्नता है। ऐसा नहीं है कि भारत जैसे विशाल देश के विभिन्न राज्यों में भी केवल एक-एक भाषा ही बोली जाती है। आपको अनेक ऐसे राज्य मिल जाएंगे जहां एक या दो भाषाएं नहीं बल्कि दो से अधिक भाषाएं अपना सह अस्तित्व बनाए हुई है। इन विविधताओं के बीच हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला है जो देश के विभिन्न भागों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। हिंदी की समृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण भारत की विभिन्न बोलियां एवं भाषाएं हैं जिन्होंने इसे अपनी मौलिकता और व्यापकता प्रदान की है। भारत की बोलियाँ हमें हिंदी भाषा के विकास और विस्तार के विविध पहलुओं को समझने में सहायता करती है।

भाषा को किसी देश या समुदाय के लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली संचार प्रणाली के रूप में माना जा सकता है। मानव समुदाय विभिन्न शब्दों के साथ संचार की एक विधि के रूप में भाषा का उपयोग करते हैं। भारतीय संविधान में 22 अनुसूचित भाषाएं हैं जिन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिया गया है। राज्यों की विधानसभाएं इनमें से किसी एक भाषा को अथवा चाहें तो एक से अधिक भाषाओं को अपने राज्य की राज्यभाषा बना सकती हैं जिसमें उस राज्य के अंतर्गत प्रशासनिक कार्यों को सम्पन्न किया जाता है। यह भाषा संपूर्ण प्रदेश के अधिकांश जन-समुदाय द्वारा बोली और समझी जाती है, प्रशासनिक दृष्टि से संबंधित राज्य में सर्वत्र इस भाषा की स्वीकार्यता रहती है।

अब केंद्र सरकार या देश की सरकार की बात करें तो इसकी अपनी राजभाषा है, भारत के परिप्रेक्ष्य में किसी ऐसे भाषा को राजभाषा अर्थात केंद्र सरकार के कार्यालयों के कामकाज की भाषा बनाना आवश्यक था जिसकी पहुंच देश के बहुसंख्यक नागरिकों के मध्य हो और प्रत्येक राज्यों में थोड़े-बहुत लोग उसे जानते हो। इस आधार

पर हिंदी शत-प्रतिशत खरी उतरती है इसलिए संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। भारत में लगभग 57.1% लोग हिंदी जानते हैं जिनमें से 43% लोगों की मातृभाषा हिंदी है।

हिंदी उन भाषाओं में से एक है जिसे राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक स्वीकृति मिली है। हिंदी भाषा ने विभिन्न बोलियों से शब्द, व्याकरण और अभिव्यक्ति के तरीके अपनाकर अपनी समृद्धि को निरंतर बढ़ाया है। भाषा के जिस रूप का प्रयोग किसी छोटे क्षेत्र में बोलने के लिए किया जाता है उसे बोली कहते हैं। भाषा और बोली दोनों ही साहित्य की महत्वपूर्ण विधाएं हैं। मुख्य तौर पर बात करें तो भाषा की अपनी लिपि होती है और किसी भाषा की सभी बोलियां लगभग एक ही लिपि में लिखी जाती है। भाषा मानकीकृत और नियमबद्ध होती है जबकि बोली में व्याकरणिक शुद्धता नहीं होती और यह अधिक लचीली होती है, यही कारण है कि आमजन में इनकी स्वीकार्यता अधिक होती है। बोलियां जो न केवल अपने आप में एक बड़ी परंपरा, इतिहास व सभ्यता को समेटे हुए हैं वरन स्वतंत्रता संग्राम व वर्ग-संघर्ष में भी इनका बड़ा योगदान रहा है। हिंदी की विभिन्न बोलियां में भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा, मैथिली, हरियाणवी, राजस्थानी इत्यादि प्रमुख है जो राजभाषा हिंदी की जड़ों को निरंतर सींचती रहती है। ये बोलियां क्षेत्रीय संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं और हिंदी भाषा में अपनी विशेषता जोड़ती है। इनमें से कुछ में अत्यन्त उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना हुई है जिनमें ब्रजभाषा और अवधी प्रमुख हैं।

बोलियों में विविधता के कारण ही हिंदी भाषा का स्वरूप अलग-अलग क्षेत्रों में असमान और प्रवाहमान है। भारत के हर क्षेत्र की अपनी एक विशिष्ट बोली है जो वहां के लोगों को संस्कृति, रहन-सहन और भावनाओं को व्यक्त करती है। यदि आप सूरदास, रसखान, तुलसी की ब्रज में रचित कृष्ण की लीलाओं का अध्ययन करेंगे तो इसमें ब्रज क्षेत्र के प्रेम, वात्सल्य, शृंगार और भक्ति की अनुपम छटा आपको मिलेगी, विशेष रूप से सूरदास की बाल लीला तो संभवतः हिंदी साहित्य में अन्यत्र नहीं होगी। इन रचनाओं का हिंदी साहित्य के भक्तिकाल पर संपूर्ण प्रभुत्व माना जा सकता है। इसी तरह भोजपुरी के लोकगीत और कहानियां हिंदी भाषा को जीवंतता प्रदान करती है। विभिन्न बोलियों के अनेक शब्द और वाक्यांश हिंदी में स्थापित हो गए हैं। भोजपुरी, अवधी, मगही, छत्तीसगढ़ी और मैथिली जैसी बोलियों ने हिंदी को सरल और लोकप्रिय बनाया है। बोलियों की अपनी आत्मीयता होती है और बोलियों के शब्दकोश के कारण हिंदी भाषा में सहजता और आत्मीयता आ गई है। बोलियों के स्वरूप ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है जिसमें बड़े रूप में लोकगीत, लोककथाएं, लोकनाट्य और लोकोत्सव शामिल हैं।

अवधी में लिखी गई तुलसीदास की 'रामचरितमानस' और ब्रज में सूरदास की रचनाओं ने हिंदी साहित्य को भरपूर समृद्धि दी, यह रचनाएं हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। मीरा बाई की रचनाएं राजस्थानी में हैं लेकिन उनकी प्रसिद्ध रचनाएं, हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की अमर निधि हैं। भक्तिकाल के संत कवियों ने भी अपनी रचनाओं में विभिन्न बोलियों का प्रयोग कर हिंदी साहित्य को विस्तार दिया। इन रचनाओं में समाज की सच्चाई, मानवता और आध्यात्मिकता को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। इससे हिंदी साहित्य को एक नई दिशा मिली और यह जन-जन तक पहुंच सकी। भारत की बोलियां एक बड़े क्षेत्र की संपूर्ण संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं। हर बोली में वहां की लोक संस्कृति, मान्यताएं और जीवन शैली की झलक मिलती है। जब ये बोलियां हिंदी में समाहित होती हैं तो वो हिंदी को एक सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान करती हैं। राजस्थानी में जहाँ वीरता और गौरव की कथाएं मिलती हैं वहीं छत्तीसगढ़ी में जीवन की सरलता और उल्लास की झलक दिखाई देती हैं।

देश व समाज को समरसता का संदेश देने वाली कबीर की साहित्यिक रचनाएं हिंदी साहित्य की अप्रतिम है। हिंदी भाषा को जनसाधारण तक पहुंचाने व सर्वग्राह्य बनाने के लिए कबीर ने अथक प्रयास किए। इनकी भाषा में हिंदी भाषा की सभी बोलियों के शब्द मिलते हैं। कबीर की भाषा सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खिचड़ी रही है। राजस्थानी, हरयाणवी, पंजाबी, खड़ी बोली, अवधी, ब्रजभाषा के शब्दों की बहुलता इनकी रचनाओं में है। रमैनी और सबद में ब्रजभाषा की अधिकता है तो साखी में राजस्थानी व पंजाबी मिली खड़ी बोली की। इन्होंने हिंदी की बोलियों के साथ-साथ पंजाबी मिश्रित खड़ी बोली का भी प्रयोग किया है।

भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है जबकि बोली केवल सीमित क्षेत्र या समुदाय में प्रयुक्त होती है। एक बार जब बोलियों के शब्द हिंदी भाषा की रचनाओं में प्रयुक्त हो जाते हैं तो उसे राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति मिल जाती है और वह हिंदी भाषा के शब्द के रूप में

परिणत हो जाता है। हिंदी भाषा के शब्द-समूह में केवल उनकी अपनी बोलियों के ही शब्द नहीं है वरन प्रादेशिक भाषाओं बंगाली, कन्नड़, तेलुगू, मराठी और अन्य भाषाओं की बोलियों ने भी हिंदी को नए शब्द और अभिव्यक्ति के तरीके दिए हैं। हिंदी ने अन्य भाषाओं और उनकी बोलियों का खुले मन से स्वागत किया है। ज़माना, माहौल, कालीन इत्यादि शब्द उर्दू-फारसी से हिंदी में आए हैं तो वहीं ऑफिस, कॉलेज, बस, स्टेशन जैसे अंग्रेजी शब्द हिंदी में रच-बस गए हैं। जैसे-जैसे आवागमन और संचार के साधन बढ़ें हैं, भाषाओं का भी एक-दूसरे पर प्रभाव दृष्टिगत हुआ है।

हिंदी के विकास की गति को भारतीय भाषाओं की बोलियों से बल मिला है। वैश्वीकरण का एक लाभ यह हुआ कि बोली और भाषाओं में परस्पर सामंजस्य बढ़ा है और इसमें लगने वाले समय में महत्वपूर्ण कमी आई है। समय के साथ-साथ बोलियों के मुहावरे और विशेषकर लोकोक्तियों ने राजभाषा हिंदी को नया रूप दिया है। भारत की हर बोली ने हिंदी को कुछ न कुछ दिया है जिससे यह अपेक्षाकृत व्यापक और सशक्त हुई। ऐसा नहीं है कि बोलियों से हिंदी को ही समृद्धि मिली है बल्कि हिंदी में जुड़ने से बोलियों का दायरा भी बढ़ा है। बोलियों के शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियां हिंदी के माध्यम से एक क्षेत्र विशेष से निकलकर दूसरे प्रदेशों में विस्तारित हुए हैं और इनके साथ ही इनसे जुड़ी संस्कृतियां, व्यवहार व अर्थ को भी नए रूप मिले हैं। चूंकि हिंदी देश की राजभाषा है इसलिए हिंदी की बोलियां को यह लाभ मिला कि वह देश के अधिकांश भागों तक पहुंच गई।

प्रौद्योगिकी के आगमन ने आरंभ में तो भाषाई विकास को प्रभावित किया। चूंकि इनका विकास और उन्नयन भारत में नहीं हुआ था इसलिए भारतीय भाषाओं को सूचना प्रौद्योगिकी ने प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया लेकिन समय के साथ-साथ अनुसंधान और अनुप्रयोग ने न केवल राजभाषा हिंदी के लिए वरन भारतीय बोलियों के लिए भी प्रचार के नए द्वार खोल दिए। आरंभ में कुछ सुविधाएं केवल राजभाषा हिंदी के लिए उपलब्ध थीं जो आगे चलकर अन्य भारतीय भाषाओं व उनकी बोलियों के लिए भी उपलब्ध हो गए। यू-ट्यूब पर अब विदेशों से भी भारतीय क्षेत्रीय भाषा के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को मजबूती मिल रही है। सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग भी हिंदी और क्षेत्रीय भाषा के दिशा में नवोन्मेषी साधन कहे जा सकते हैं। एक ओर क्षेत्रीय बोलियों के प्रयोग से बॉलीवुड की फिल्मों को नए रंग में ढाला जा रहा है वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से बोलियां एक बड़े दर्शक-वर्ग तक अपनी पैठ बना रहा है। इन सबसे हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति का विस्तार सुदूर क्षेत्रों तक हुआ है।

बोली, भाषा की मूल इकाई है और जैसे-जैसे बोली में नए शब्द, अर्थ प्रवेशित होते हैं, भाषा का शब्दकोश व्यापक होता चला जाता है। भारत की बोलियों से समृद्ध होती राजभाषा हिंदी केवल एक भाषा का विकास नहीं, बाल्कि एक संपूर्ण सांस्कृतिक आंदोलन है जो भारत की एकता और अखंडता का मूल है। हिंदी और उसकी बोलियां संपूर्ण भारतीय संस्कृति और सभ्यता की ध्वजवाहक हैं। बोलियां, क्षेत्र को एकात्म करती हैं और भाषाएं राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोती है। भाषा और बोली दोनों मानव संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं।

बोलियों के माध्यम से भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के जो भी तौर-तरीके, उपकरण और संसाधन हमारे पास हैं, उनका इष्टतम उपयोग क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण है। भारत की भाषाई विविधता हमारी जिजीविषा और काम करने की गुंजाइश हमेशा बनाए रखता है। भाषा की समृद्ध का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि किसी देशकाल की सामाजिक, भौतिक और सांस्कृतिक विचार उसके माध्यम से ही आगे बढ़ते हैं। हिंदी एक निरंतर विकसित होती हुई भाषा है, इसका कारण यह है कि उसने निरंतर दूसरे भाषाओं से शब्द ग्रहण कर विशाल जनसमूह की अभिव्यक्ति को मुखर किया है। राजभाषा के रूप में हिंदी का मुख्य उद्देश्य देश के क्षेत्रीय हिस्सों को एक सूत्र में बांधना है। इसके लिए हिंदी को सरल, सुबोध और सर्वग्राही बनाना आवश्यक है जिसमें भारतीय बोलियों का योगदान महत्वपूर्ण है। जब लोग अपनी बोली के शब्दों को हिंदी में पाते हैं तो वे उससे जुड़ाव महसूस करते हैं। इस प्रकार हिंदी न केवल एक भाषा, बल्कि एकता का माध्यम भी बन पाती है। हिंदी और उसकी बोलियां परस्पर पूरक हैं जो भारतीय समाज को भाषा और संस्कृति के धागे में पिरोते हैं।

-वरिष्ठ प्रबंधक
प्रधान कार्यालय संचालन विभाग
नई दिल्ली

ग़ज़ल

ये ग़ज़ाल सी निगाहें
ये शबाब, ये अदाएं
तू तो ख़ुद ही इक ग़ज़ल है
तुझे क्या ग़ज़ल सुनाएं

तुझे एक बार देखा,
तो ये दिल ने दी दुआएं
तुझे बार-बार देखें
तुझे देखते ही जाएं

ये सियाही क्या उतारे
छवि रूप की तुम्हारे
चलो इंद्र से धनुष के
सभी रंग माँग लाएं

तिरे लब खुलें सनम जब
तो कली को लाज आए
उड़े ज़ुल्फ़ जब हवा में
तो हों सरनिगूँ घटाएं

तू सँवार ज़ुल्फ़े-शबगूँ
ये दो नैन रख के आगे
कि मजाल क्या हमारी,
तुझे आइना दिखाएं

मिरे बोल बेनवा हैं
तिरे साज़ बे-'सदा' हैं
चलो सुर में सुर मिला के
नई बंदिशें बनाएं

-o-

ज़ुल्फ़ लहरा के फ़ज़ा
पहले मुअत्तर कर दे
जाम फिर आँखों के
मैख़ाने से भर-भर कर दे

बुझ गई शमा की लौ
तेरे दुपट्टे से तो क्या
अपनी मुस्कान से
महफ़िल को मुनव्वर कर दे

होश तो उड़ गए
आँखों से ही पी कर साकी
अब ज़रा वो भी पिला दे
जो गला तर कर दे

ग़ैर को मुँह न लगा,
होश में हूँ जब तक मैं
इतना अहसान मिरे
साक़िया मुझ पर कर दे

बे-मुरव्वत हैं बड़े,
पी के भी हैं होश में जो
ऐसे मयख़ारों को
मैख़ाने से बाहर कर दे

शेर में साथ रवानी के
मआनी भी तो भर
ए 'सदा' क़ैद तू
कूज़े में समंदर कर दे

-o-

-आर. पी. सिंह
पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

संसदीय राजभाषा समिति का गुवाहाटी दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति ने अप्रैल, 2025 माह में अपने गुवाहाटी तथा शिलांग दौरे के दौरान 22 अप्रैल, 2025 को बैंक के आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। बैंक की दृष्टि से समिति का यह दौरा उत्कृष्ट रहा तथापि समिति सदस्यों ने अपेक्षा जताई कि बैंक, भविष्य में भी राजभाषा क्रियान्वयन हेतु यथोचित उपाय करेगा।

समिति सदस्यों में श्री भर्तृहरि महताब, श्री श्रीरंग आप्पा बारणे, श्री नीरज डाँगी, श्री सतीश कुमार गौतम, श्री ओमप्रकाश भूपालसिंह उर्फ पवन राजेनिंबालकर, श्रीमती संगीता यादव और श्री ईरण्ण कड़ाड़ी उपस्थित रहे।

संसदीय राजभाषा समिति का गुवाहाटी दौरा

कार्यक्रम में वित्तीय सेवाएं विभाग की ओर से उप निदेशक (राजभाषा) श्री धर्मबीर तथा बैंक की ओर से महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर, आंचलिक प्रबंधक गुवाहाटी श्री राजीव कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा, राजभाषा अधिकारी श्री रवि यादव और आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी में पदस्थ अधिकारी श्री गौतम लामा ने सहभागिता की।

बैंकिंग में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन मापदंड

चन्द्र किशोर पाल

आज के वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में बैंकिंग उद्योग को अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानताएं और अभिशासन की कमियां जैसे मुद्दे न केवल वित्तीय स्थिरता को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि समाज और पर्यावरण पर भी गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए बैंकिंग क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन मापदंडों का अंगीकरण अनिवार्य हो गया है। ईएसजी मापदंड जो पर्यावरणीय, सामाजिक और प्रशासनिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वित्तीय संस्थानों को अपने निवेश के निर्णयों में नैतिकता और जिम्मेदारी को शामिल करने के लिए अनुमत करते हैं। उदाहरण के लिए पर्यावरणीय मापदंड, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक उपायों को अपनाने पर जोर देते हैं। इसी प्रकार सामाजिक मापदंड समानता, विविधता और सामुदायिक विकास को ध्यान में रखते हुए कामकाजी वातावरण और ग्राहक संबंधों में सुधार करने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रशासनिक मापदंड भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये वित्तीय संस्थानों की पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक प्रबंधन को सुनिश्चित करते हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में ईएसजी मापदंडों का प्रभाव धीरे-धीरे स्पष्ट हो रहा है। अध्ययन बताते हैं कि जिन संस्थानों ने ईएसजी प्रथाओं को अपनाया है, उनके वित्तीय प्रदर्शन में सुधार हुआ है। इसके अलावा उपभोक्ता और निवेशक भी अब ऐसे बैंकों की ओर बढ़ रहे हैं जो सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों का पालन करते हैं। यह बदलाव न केवल बैंकों के लिए लाभदायक है बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी लाभकारी है। भविष्य की बैंकिंग में ईएसजी मापदंडों की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण होने जा रही है। डिजिटलाइजेशन और तकनीकी नवाचार के साथ बैंक अब अपने ग्राहकों को अधिक पारदर्शी और जिम्मेदार सेवाएं प्रदान करने में सक्षम हैं। ईएसजी मापदंडों को अपनाने से बैंकों को जोखिम प्रबंधन में मदद मिलती है और वे बेहतर निवेश निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर कई नीतिगत और विनियामक परिवर्तन हो रहे हैं जो ईएसजी मानकों को अपनाने पर जोर दे रहे

हैं। अंतरराष्ट्रीय संगठन और सरकारें भी अब वित्तीय संस्थानों से अधिक पारदर्शिता और जिम्मेदारी की अपेक्षा कर रही हैं। इन सभी बदलावों के कारण ईएसजी मापदंड भविष्य की बैंकिंग के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बनते जा रहे हैं। पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन (ईएसडी) मापदंड बैंकिंग उद्योग के लिए केवल एक प्रवृत्ति नहीं हैं, बल्कि ये एक आवश्यक दिशा हैं जिससे न केवल बैंकों की स्थिरता सुनिश्चित होगी, बल्कि समाज और पर्यावरण के प्रति उनकी जिम्मेदारी भी बढ़ेगी।

पर्यावरण मापदंड

पर्यावरण का अर्थ है वह प्राकृतिक और मानव निर्मित वातावरण जिसमें हम निवास करते हैं। इसमें वायुमंडल, जल, भूमि, वनस्पति, जीव-जंतु और मानव गतिविधियाँ शामिल हैं। पर्यावरण का संतुलन हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह न केवल हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। मानव गतिविधियों जैसे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और कृषि इत्यादि ने पर्यावरण पर कई नकारात्मक प्रभाव डाले हैं जिससे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता में कमी जैसी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण महत्वपूर्ण है। पर्यावरणीय मापदंडों का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना है। बैंकिंग क्षेत्र में ये मापदंड निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं :

- **हरित वित्तपोषण :** भविष्य की बैंकिंग में हरित वित्तपोषण एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। बैंकों को नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं, ऊर्जा दक्षता के उपाय और पर्यावरण संरक्षण से जुड़े अन्य परियोजनाओं में निवेश करने के लिए प्रेरित करना होगा। उदाहरण के लिए बैंकों को सौर ऊर्जा परियोजनाओं, पवन ऊर्जा परियोजनाओं और हाइड्रो पॉवर परियोजनाओं में वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए। इससे न केवल पर्यावरण को लाभ होगा, बल्कि बैंकों को भी नए और स्थिर आय स्रोत मिलेंगे।

- **जलवायु जोखिम प्रबंधन :** जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न होने वाले जोखिमों का प्रबंधन करना अब बैंकों के लिए अनिवार्य हो गया है। बैंकों को अपने पोर्टफोलियो में जलवायु जोखिमों का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। इसके तहत उन्हें यह समझना होगा कि जलवायु परिवर्तन से संबंधित घटनाएं जैसे बाढ़, सूखा और अन्य प्राकृतिक आपदाएं उनके वित्तीय स्वास्थ्य पर कैसे प्रभाव डाल सकती हैं। इससे उन्हें संभावित वित्तीय जोखिमों को पहचानने और उन्हें कम करने में मदद मिलेगी।

- **पर्यावरणीय रिपोर्टिंग :** बैंकों को अपनी पर्यावरणीय गतिविधियों की पारदर्शिता बढ़ाने के लिए नियमित रूप से रिपोर्टिंग करनी चाहिए। इससे ग्राहकों और निवेशकों में विश्वास बढ़ेगा। उदाहरण के लिए बैंकों को अपनी हरित वित्तपोषण गतिविधियों, कार्बन उत्सर्जन और अन्य पर्यावरणीय पहलों की जानकारी साझा करनी चाहिए। इस पहल से न केवल बैंकों की छवि में सुधार होगा बल्कि यह निवेशकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बनेगा।

सामाजिक मापदंड

सामाजिक मापदंडों का उद्देश्य समाज में समानता, समावेशिता और समुदाय के विकास को बढ़ावा देना है। बैंकिंग क्षेत्र में ये मापदंड निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं:

- **समावेशी वित्तीय सेवाएं :** बैंकों को उन वर्गों के लिए वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिन्हें पारंपरिक बैंकिंग सेवाओं से वंचित रखा गया है जैसे कि ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे किसानों को ऋण उपलब्ध कराना, महिलाओं की उद्यमिता को प्रोत्साहित करना और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों को वित्तीय सेवाओं की पहुंच प्रदान करना। इससे सामुदायिक विकास को बढ़ावा मिलेगा और आर्थिक समानता में सुधार होगा।

- **ग्राहक संरक्षण :** बैंकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके ग्राहक सुरक्षित और पारदर्शी सेवाओं का उपयोग कर सकें। इसके लिए उन्हें उचित और स्पष्ट जानकारी प्रदान करनी चाहिए। जैसे कि ग्राहक को उनके वित्तीय उत्पादों की शर्तों, जोखिमों और लाभों की सही जानकारी मिलनी चाहिए। इससे न केवल ग्राहकों का विश्वास बढ़ेगा बल्कि यह बैंकों की जिम्मेदारी भी सुनिश्चित करेगा।

♦ **श्रमिक अधिकार :** बैंकों को अपने कर्मचारियों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। यह सुनिश्चित करेगा कि कर्मचारियों को उचित वेतन, कार्य वातावरण और विकास के अवसर मिलें। बैंकों को अपने कर्मचारियों के प्रशिक्षण और विकास के लिए कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए ताकि वे अपने करियर में आगे बढ़ सकें। इससे न केवल कर्मचारियों की संतुष्टि बढ़ेगी, बल्कि यह बैंकों के लिए दीर्घकालिक लाभकारी भी होगा।

अभिशासन मापदंड

अभिशासन का अर्थ है संगठनात्मक ढांचे और प्रक्रियाओं के माध्यम से निर्णय लेने, नीति निर्माण और कार्यान्वयन की व्यवस्था। बैंकिंग क्षेत्र में गवर्नेंस का उद्देश्य उच्चतम स्तर की पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिकता सुनिश्चित करनी है। यह बैंक के प्रबंधन और निदेशक मंडल के बीच स्पष्ट भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को परिभाषित करता है ताकि वित्तीय स्थिरता और ग्राहक विश्वास को बनाए रखा जा सके। बैंकिंग गवर्नेंस में कई महत्वपूर्ण तत्व शामिल होते हैं जैसे कि जोखिम प्रबंधन, आंतरिक नियंत्रण और अनुपालन। यह सुनिश्चित करता है कि बैंक वित्तीय नियमों और विनियमों का पालन करें और ग्राहक की जानकारी और धन की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाए। इसके अलावा अच्छे गवर्नेंस से बैंक की प्रदर्शन क्षमता में सुधार होता है और यह दीर्घकालिक विकास के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। संक्षेप में, बैंकिंग गवर्नेंस न केवल वित्तीय संस्थानों की विश्वसनीयता और स्थिरता को बढ़ाता है बल्कि व्यापक अर्थव्यवस्था में विश्वास और स्थिरता भी सुनिश्चित करता है। अभिशासन मानदंड निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं :

♦ **पारदर्शिता :** बैंकों को अपने निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को पारदर्शी बनाना चाहिए। इससे ग्राहकों और निवेशकों में विश्वास बढ़ेगा। जैसे कि बैंकों को अपनी गतिविधियों, वित्तीय स्थिति और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी को सार्वजनिक रूप से साझा करना चाहिए। इससे न केवल बैंकों की छवि में सुधार होगा, बल्कि यह उन्हें अनैतिक प्रथाओं से बचने में भी मदद करेगा।

♦ **नैतिकता :** बैंकिंग क्षेत्र में नैतिकता का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। बैंकों को धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और अनैतिक प्रथाओं से बचना चाहिए। इसके लिए उन्हें अपने कर्मचारियों

के लिए नैतिकता संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए ताकि वे सही और गलत के बीच के अंतर को समझ सकें। यह न केवल बैंकों की प्रतिष्ठा को सुरक्षित करेगा बल्कि यह ग्राहकों के विश्वास को भी मजबूत करेगा।

♦ **जवाबदेही :** बैंकों को अपने कार्यों के लिए जवाबदेह होना चाहिए। इससे उन्हें अपने ग्राहकों और समुदाय के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने में मदद मिलेगी। बैंकों को अपनी नीतियों और प्रक्रियाओं के अनुसार कार्य करना चाहिए और यदि कोई गलती होती है तो उसे स्वीकार करना चाहिए। इससे न केवल बैंकों की विश्वसनीयता बढ़ेगी बल्कि यह उन्हें सुधार और विकास के लिए प्रेरित करेगा।

भविष्य की बैंकिंग में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन (ईसीजी) मापदंड का प्रभाव

♦ **निवेशकों का ध्यान :** भविष्य में निवेशक पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन मापदंडों को ध्यान में रखते हुए अपने निवेश के निर्णय लेंगे। बैंकों को अपनी पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन नीतियों को मजबूत करना होगा ताकि वे निवेशकों का ध्यान आकर्षित कर सकें। निवेशकों के लिए ईसीजी मापदंडों का पालन करने वाले बैंकों में निवेश करना एक सुरक्षित और दीर्घकालिक लाभ देने वाला निर्णय होगा।

♦ **ग्राहकों की अपेक्षाएं :** ग्राहक अब सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए बैंक चुन रहे हैं। बैंकों को ग्राहकों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए पर्यावरण,

सामाजिक और अभिशासन मानदंडों को अपनाना होगा। इस प्रकार, ग्राहक अब उन बैंकों को प्राथमिकता देंगे जो पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हैं और समाज के विकास में योगदान कर रहे हैं।

- **प्रतिस्पर्धात्मक लाभ :** जो बैंक ईसीजी मापदंडों का पालन करेंगे वे प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करेंगे। इससे उन्हें नए ग्राहकों को आकर्षित करने और बाजार में अपनी स्थिति को मजबूत करने में मदद मिलेगी। जैसे-जैसे अधिक ग्राहक और निवेशक सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देंगे, बैंकों के लिए ईसीजी मापदंडों का पालन करना आवश्यक हो जाएगा।

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन मापदंड भविष्य की बैंकिंग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हैं। यह आवश्यक है कि बैंकों ने केवल अपने व्यवसाय को धारणीय बनाने के लिए इन मापदंडों को अपनाएं, बल्कि समाज और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझें। ईसीजी मापदंड का पालन करने से बैंकों को दीर्घकालिक लाभ और स्थिरता प्राप्त होगी, जिससे अंततः समाज और अर्थव्यवस्था को भी लाभ होगा। वैश्विक स्तर पर निवेशक और ग्राहक उन संस्थाओं को प्राथमिकता देने लगे हैं जो सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों को ध्यान में रखते हुए काम कर रही हैं। बैंकों को इस बदलाव को समझते हुए अपनी नीतियों में आवश्यक परिवर्तन लाने होंगे। इसके लिए उन्हें अपने कर्मचारियों को ईसीजी पहलुओं के बारे में प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे इन मापदंडों को अपने दैनिक कार्यों में लागू कर सकें।

यह एक ऐसा अवसर है जहां बैंक सामाजिक अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हैं और एक सकारात्मक छवि बना सकते हैं। उदाहरण के लिए बैंकों को धारणीय परियोजनाओं को वित्तपोषित करने, ग्रीन बॉण्ड जारी करने और समुदायों के विकास में योगदान देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जब बैंक अपने निवेशकों को यह सुनिश्चित करते हैं कि वे जिम्मेदार और स्थायी तरीके से काम कर रहे हैं तो इससे न केवल उनकी विश्वसनीयता बढ़ती है, बल्कि यह उन्हें नए बाजारों में प्रवेश करने और नए ग्राहकों को आकर्षित करने में भी मदद करता है। बैंकों को ईसीजी मापदंडों को अपने कार्यों में शामिल करने और धारणीय भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए उन्हें अपनी नीतियों में बदलाव करना होगा तथा अपने संचालन के सभी पहलुओं में ईसीजी सिद्धांतों को एकीकृत करना होगा। यह केवल विधिक आवश्यकता नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है।

-प्रबंधक (अग्नि सुरक्षा)
प्रधान कार्यालय सुरक्षा विभाग

रचनाकारों से निवेदन

रचनाकारों से निवेदन है कि बैंक के प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही तिमाही हिंदी गृह-पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशन हेतु लेख भेजते समय लेख के अंत में अपना नाम, शाखा/ कार्यालय का पता, मोबाइल नंबर तथा अपना बैंक खाता संख्या व आईएफएससी कोड अवश्य लिखें। इसके साथ ही लेख के संबंध में मौलिकता प्रमाण-पत्र और अपना फ़ोटो भी उपलब्ध कराएं। सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा स्थायी खाता संख्या (पैन नंबर) का भी उल्लेख करें।

-मुख्य संपादक

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम

आंचलिक कार्यालय नोएडा

आंचलिक कार्यालय बरेली

आंचलिक कार्यालय पटियाला

आंचलिक कार्यालय होशियारपुर

आंचलिक कार्यालय चेन्नै

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय भोपाल

आंचलिक कार्यालय कोलकाता

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-2

आंचलिक कार्यालय लखनऊ

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, रोहिणी, नई दिल्ली

सहभागी

मेरा गांव, मेरा देश

प्रमोद कुमार

गांव, भारतीय संस्कृति और उसकी जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है। महात्मा गाँधी का कथन कि भारत गांवों में बसता है, आज भी प्रासंगिक है और यह प्रासंगिकता निरंतर बनी रहेगी। गांव की मूल पहचान उनके पारंपरिक मूल्य और रीति-रिवाज हैं। सामुदायिक जीवन, संयुक्त परिवार, प्राकृतिक संसाधनों का औचित्यपूर्ण उपभोग और उन पर निर्भरता, सामाजिक समरसता व मूल्य जैसे अनेक कारक गांव को जीवंत बनाती है। ग्रामीण जन भारतीय समाज का केंद्र होने के साथ ही वास्तविक भारत के परिचायक भी हैं।

जब हमें गांव की याद आती है तो बहुत सी खूबसुरत तस्वीरें मन और मस्तिष्क में तैरने लगती हैं। हम अपने गांव से दूर शहरों में बैठे हुए अक्सर अपने गांव को याद करते रहते हैं। हम अपनी जरूरतों के लिए शहरों की ओर चले तो जाते हैं लेकिन हमारे दिल और दिमाग से हमारा गांव हम से कभी दूर नहीं हो पाता है। हम पढ़ाई-लिखाई तथा रोजगार की तलाश में अपने गांव से सैकड़ों किलोमीटर दूर चले जाते हैं लेकिन गांव की तरह कभी खुश नहीं रह पाते हैं। गांव से दूर शहरों में खुश न रह पाने के कई वास्तविक कारण हैं। जब हम अपने गांव से दूर किसी अंजान शहर में रोजगार की तलाश में जाते हैं तो सब से पहली समस्या आती है रहने और खाने की, असली जीवन का संघर्ष वहीं से शुरु होता है। अपने गांव का कोई हमारा पुराना दोस्त या कोई चचेरा भाई हमारे कहने पर और अपनी मजबूरी बताने पर हमें शहर बुला लेता है, काम भी दिला देता है, 4 से 6 दिन अपने साथ अपने कमरे में साथ रखकर खाना-पीना भी करा देता है। उसके बाद वह चाहता है कि अब यह कोई अपना अलग कमरा लेकर रहे और अपने खाने-पीने की व्यवस्था स्वयं कर ले। उस दोस्त की बात हमें थोड़ी खराब लगने लगती है पर सच तो यही होता है कि शहर में हर किसी के पास बहुत ही सीमित संसाधन होते हैं। हकीकत तो यही होती है कि हम जितनी जल्दी अपनी सुविधाएं स्वयं बना लें लेकिन हम भी उस नए शहर में कई तरीकों से मजबूर होते हैं।

हमारे सामने बहुत सी चुनौतियां मुंह बनाए सामने खड़ी होती हैं। नया कमरा खोजना, फिर कमरे में रहने के लिए खाने-पीने से लेकर सोने तक की सुविधाओं को जुटाना और सबसे बड़ी जो चुनौती होती है कि इनके लिए पैसों की आवश्यकता, जो हमारे पास फिलहाल में पर्याप्त नहीं होता है। इस कठिन समय में हम कई लोगों से मदद लेते हैं, अपने विभाग में जहां काम कर रहे होते हैं वहां से यह भी नहीं होता है कि वहां से अग्रिम वेतन मिल ही जाए कभी कुछ प्रतिशत मिल भी जाता है, कभी नहीं भी। तब नहीं की परिस्थिति में हम अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से उधार भी मांग लेते हैं। फिर यह चुनौती और लंबी होती जाती है क्योंकि महीना पूरा होने पर जो वेतन मिलता है वह भी कटौती के बाद बहुत कम मिल पाता है।

शहर में किसी निजी कंपनी, कारखाना, दुकान या किसी के घर-सोसाइटी में चौकीदारी जैसे काम मिल पाते हैं। इन संस्थानों में हमें बिना कोई नियम-कानून के उन निजी मालिकों के अनुसार कितनी भी देर तक या किसी भी तरह का काम करना पड़ता है। महीना पूरा होने पर जो भी वेतन मिलता है, वह हमारे लिए मूलभूत बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लायक भी नहीं होता लेकिन फिर भी हमारे पास कोई विकल्प नहीं। जो मिलता, जैसा मिलता, मन मारकर करना ही पड़ता है। उन्हीं थोड़े से पैसों में अपने कमरे और खाने का तथा शहर से काफी दूर मेरा गांव जहां पर हम अपने पूरे परिवार को छोड़कर बस इस भरोसे पर आए होते हैं कि हम चार पैसे कमाकर घर भेजेंगे तो घर का खर्चा चलेगा। घर

वालों को भी इंतजार होता है कि हम कब पैसा भेजेंगे तो माता-पिता की दवाई लेनी है और बच्चों की स्कूल की फीस भरनी है। इसी तरह से जिंदगी चलने लगती है। अब हमारे पास अपनी कोई च्वाइस नहीं होती कि लौकी और करैले की सब्जी हम नहीं खाएंगे, जो मिलता या जैसा बनता, कच्चा-पका हम चुपचाप खा लेते क्योंकि अब कोई माँ, बहन या पत्नी सामने नहीं होती जिनके ऊपर हम यह चिल्लाकर कह पाएं कि क्या खाना बनाए हो, इसमें नमक कम है, मैं यह खाना बिल्कुल नहीं खाऊंगा। अब हम अपनी जिंदगी को अपने प्यारे गांव से किसी दूर, शहर में रोजी-रोटी की तलाश में एक छोटे से कमरे में गुमनामी में बिताने को विवश है।

शहर में रहते-रहते हम गांव से दूर और गांव हम से बहुत दूर। इतना दूर कि जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। अब हमारा गांव अपनी वास्तविक पहचान खोता जा रहा है, ऐसा हम विश्वास के साथ कह सकते हैं। अब गांव में गांव जैसी परिस्थितियां नहीं रही। ग्रामीण इलाके में सबसे खराब काम जो लगातार होता जा रहा है, वह है बाग-बगीचों का काटा जाना, बाग-बगीचे, पेड़-पौधे हमारे ग्रामीण अंचलों की विशेष पहचान होते थे।

आज के समय में हम सब अपने गांव या आस पास के गांव, समस्त ग्रामीण अंचलों में लगातार बाग-बगीचों को काट रहे हैं और उस जगह पर निर्माण कार्य तेजी से हो रहा है। बाग की जगह कोई पेड़ नया बगीचा नहीं लगाया जा रहा है। आजकल ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसा लगता है कि लोग वृक्षारोपण भूल से गए हैं या फिर उसके महत्व को ही समझना छोड़ दिया है । अब गांव जाते हैं तो हमें आम, जामुन के घनघोर बगीचे अब दिखाई नहीं देते। पहले जब गर्मियों की छुट्टियों में दादी-नानी के गांव जाया करते थे तो आम के बगीचे में तरह-तरह के आम खाने को मिलते थे। आज के समय के गांव अपनी दिशा और दशा बदल चुके हैं। अब अधिकतर गांवों में वो पुराने खेल, खेलते हुए आज के बच्चे दिखाई नहीं देते, जैसे कंचे, कबड्डी, तैराकी, कुश्ती आदि। पेड़ पर चढ़ना बहुत आम बात होती थी। बिना किसी औजार के आसानी से लड़के कोई फल तोड़ने के लिए, कोई लकड़ियां तोड़ने के लिए तो कोई खेल खेलने के लिए धड़ल्ले से पेड़ों पर चढ़ जाया करते थे। तैराकी तो ग्रामीण अंचल के लोगों के लिए बहुत ही साधारण खेल है। खास तौर पर वे गांव जो नदियों के किनारे बसे हुए हैं। यह कला तो आज भी देखने को मिल जाती। नदी किनारे वाले गांव के बच्चे बहुत मजे-मजे में या खेल-खेल में बड़े आराम से नदी को पार कर जाते हैं। तैराकी का प्रचलन शहरों में अब बढ़ रहा है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में हर घर में तैराक होते हैं।

गांव भी अब शहरों की तरह बनते जा रहे हैं। सड़कों के किनारे हरे-भरे फलों से लदे हुए आम के पेड़ अब नजर नहीं आते। चाची, ताई, दादी, दादा जी के साथ खेल खेलते हुए अब बच्चे दिखाई नहीं देते। सुबह और शाम को मुहल्ले के सभी घरों से सुलगते हुए चूल्हों के धुएं की लपटें दिखाई नहीं देती। पहले अपने मुहल्ले में शाम होते ही सभी के घरों से धुआँ निकलता देखकर सबको अंदाजा हो जाता था कि खाना बनना शुरु हो चुका है। चूल्हे की सौंधी स्वादिष्ट रोटियां खाकर मन खुश हो जाता था। कोई अपने खेत से दिन भर की मेहनत से लौटता हुआ दिखता था, कोई फसल काटकर आता दिखता, कोई बैलों के साथ हल जोतकर आता दिखता। फसल कटाई के समय कोई बैलगाड़ी से फसल अनाज लादकर थके-हारे घर आकर हैंड पंप, कुएं से पानी निकाल कर नहाते धोते और दूध, दही, मक्खन, घी, ताजी-ताजी हरी सब्जियों के साथ स्वादिष्ट भोजन करके रस्सी और बांस से बनी चारपाई पर आराम से सोते दिखते थे। अब यह सारी चीजें बहुत तेजी से लुप्त होती जा रही हैं।

अब हमारे और आपके गांवों में कच्चे खपरैल वाले मकान और बड़ी-बड़ी झोपड़ी देखने को नहीं मिलती हैं। आज के दौर में ग्रामीण क्षेत्रों में पक्के मकान, पक्की सड़कें बन गईं हैं जिससे यह पता चलता है कि गांव का विकास तो अवश्य हुआ है लेकिन फिर भी हम सब के सामने एक बड़ा सवाल यह है कि गांव का युवा आज गांव में क्यों नहीं रहना चाहता है। हम यह देखते हैं कि अक्सर ग्रामीण युवा अपने-अपने क्षेत्रों से भारी मात्रा में शहरों की ओर पलायन करने में लगे हुए हैं। यह एक बहुत ही गंभीर समस्या है। इस समस्या का निदान करना करना बहुत जरुरी है। हम सब उम्मीद करते हैं कि शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों में और अधिक मजबूत होंगी और हमारे ग्रामीण अंचलों के युवा वर्ग जो गांव में रहकर अपनी परंपराओं को आगे नहीं बढाना चाहता है उस पर रोक लगेगी। अब धीरे-धीरे पुरानी परंपराएं समाप्त हो रही हैं या फिर आज के लोग उन्हें आगे नहीं बढ़ाना चाहते हैं।

आज का युवा वर्ग नई-नई तकनीक के कारण परंपराओं को निभाने में असमर्थ नजर आता है। हम ये नहीं कहते कि नई तकनीक से परहेज करो पर अपनी संस्कृति तथा परंपराओं को भी साथ लेकर चलें। अगर ऐसा करने में सफल होते हैं तो यकीन मानिए आप एक खूबसूरत समाज के निर्माता कहलाएंगे। नई तकनीक से दूर बिल्कुल नहीं रहना है, तकनीक से जुड़ना और उसके साथ बने रहना तो आज के समय की विशेष मांग एवं आवश्यकता है।

भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी गांवों में निवास करती है और इनका मुख्य व्यवसाय कृषि है जिसके कारण हमारा देश कृषि प्रधान देश कहलाता है। देश की लगभग 20 प्रतिशत अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है और लगभग 42 से 45 प्रतिशत रोजगार कृषि पर ही निर्भर है। कृषि के संबंध में उपरोक्त आंकड़े से यही प्रतीत होता है कि ग्रामीण अंचल के युवा वर्ग को गांवों में निवास करना चाहिए ताकि कृषि, परंपराएं एवं तीज– त्यौहार अपनी संस्कृति को निभा सके व अपनी आजीविका को अपने ढंग से चला सकें। ऐसा तभी संभव है जब ग्रामीण क्षेत्र के युवा अपने-अपने गांव में रहेंगे, उनका रहना तभी संभव है जब ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

अब हमारा गांव, गांव जैसा नहीं लगता क्योंकि हमारा गांव अपनी शुद्धता एवं शुद्ध वातावरण के लिए जाना जाता था। अब वैसा नहीं दिखता है, खाने-पीने की बात करें तो पीज्जा, बर्गर, चाउमीन, मैगी, मोमोस, पेप्सी, कोक, फेंटा, माजा जैसी चीजों का इस्तेमाल गांव में भी भारी मात्रा में होने लगा है। हद तब लगती है कि अब गांव में भी पैकेट वाला दूध तथा प्लास्टिक की बोतलों में पानी का इस्तेमाल अधिक मात्रा में होने लगा है। ऐसा तो हमने अपनी कल्पनाओं में भी नहीं सोचा था। पहले जैसा अब हमारे गांव में अपनापन एवं कुशल व्यवहार भी देखने को नहीं मिलता, जिस तरह से पहले भाईचारा होता था, अब नहीं होता है। पहले गांव में गांववासी समूह में मिलकर खेती-बाड़ी, शादी-विवाह, बीमारियों जैसी किसी भी परेशानी पर सामना करने के लिए एक-दूसरे के लिए खड़े होते थे। खासतौर से किसी के घर में बेटी की शादी हो तो पूरा गांव बारातियों की सेवा-सत्कार में जुट जाते थे। खाना बनवाने से लेकर बारातियों को संभालने तक का सारा काम गांववासी अपने कंधे पर जिम्मेदारी के साथ करते थे। अब ये सारी व्यवस्थाएं किराए पर कराई जाने लगी हैं जिसे देखकर पता चलता है कि अब ग्रामीण अंचलों में अपनापन समाप्त होता जा रहा है।

महात्मा गाँधी की भारत के गांवों के बारे में बहुत स्पष्ट धारणा थी। उनका जोर देकर कहना था कि भारत गांवों में रहता है कस्बों में नहीं, झोंपड़ियों में रहता है महलों में नहीं। उन्होंने यह कहते हुए इस विश्वास को कायम रखा कि यदि गांव नष्ट हो गए, तो भारत जल्द ही नष्ट हो जाएगा। गांव-मोहल्ले में विकास कार्य हो रहे हैं, यह संतोषजनक बात है लेकिन उसका बाजारीकरण किसी भी स्थिति में लाभकारी नहीं है। गांवों के विकास के लिए अनेक कार्य हो रहे हैं जिसके अंतर्गत सिंचाई व्यवस्था, आवास, दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी, सड़क, विद्युतीकरण इत्यादि प्रमुख है लेकिन इसके साथ उसके मूल स्वरूप का संरक्षण आवश्यक है। आपसी सद् व्यवहार एवं सामाजिकता जिसे हम गांव की जमा पूंजी मान सकते हैं, को बनाए रखना आवश्यक है। भारत के विभिन्न और पृथक-पृथक भौगोलिक परिवेश में गांव केवल कोई भौतिक या मूर्त स्थान नहीं है वरन यह भारतीय समाज का आधार, उसकी संस्कृति, परंपराएं, लोक सद्भावना, प्राचीन धरोहर इत्यादि का प्रतीक है। यदि देश की इकाई अपने समृद्ध स्थिति में रहे तो हो सशक्त समाज व समृद्ध राष्ट्र का निर्माण संभव होगा।

-राजभाषा अधिकारी
आंचलिक कार्यालय भोपाल

श्री गुरू अर्जन देव जी का जीवन और उपदेश

डॉ. चरनजीत सिंह

श्री गुरू नानक देव जी की पाँचवीं जोत साहिब श्री गुरू अर्जन देव जी ने श्री गुरू नानक देव जी के आदर्शों के अनुरूप सिख धर्म की नींव पर उच्च विचारों और सिद्धांतों की इमारत खड़ी की तथा इसकी रक्षा के लिए अपना आप भी कुर्बान कर दिया। श्री गुरू अर्जन देव जी ने धर्म की नींव को मजबूत बनाने और समाज के बुनियादी सिद्धांतों की ख़ातिर अपनी कुर्बानी देकर सिद्ध कर दिया कि कोई भी धर्म या देश बड़ी इमारतों से बड़ा नहीं बनता बल्कि बड़ी कुर्बानियों की बुनियाद पर ही निर्मित होता है।

श्री गुरू अर्जन देव जी ने गुरुगद्दी पर विराजमान हो कर गुरू धर्म, गुरू शक्ति, गुरू लहर और गुरू संस्था को स्थापित तथा उजागर करने के लिए जो योग्य अगुवाई की और जो योजनाएं बनाईं उन्हें अध्यात्मिक और आदर्शक रूप से साकार किया। उनका सिर्फ़ ऐतिहासिक गौरव ही नहीं बल्कि अध्यात्मिक जगत में तथा सिख धर्म की विशेषता और विलक्षणता का प्रदर्शन भी हुआ है।

श्री गुरू अर्जन देव जी चौथे गुरू श्री गुरू रामदास जी के सबसे छोटे सुपुत्र थे। बड़ा भाई पृथी चंद आप जी से ईर्ष्या करता था क्योंकि आप अधिक प्रतिभाशाली व दूरदर्शी थे। आपको पिता से दूर रखने के लिए वो हर समय कोई न कोई योजना बनाता रहता था। एक बार श्री गुरू अर्जन देव जी ने अपने पिता को लाहौर से चिट्ठियाँ लिखी थीं जिनमें पिता के प्रति प्रेम और मिलने की लालसा के अद्वितीय रस के रंग में डूबे मन के जज़्बात प्रकट किए थे। पृथी चंद ने गुरू अर्जन देव जी द्वारा भेजी गई तीनों चिट्ठियाँ छिपा लीं। पिता श्री गुरू रामदास जी को जब चिट्ठी पर पड़े अंकों से पहली चिट्ठियों के बारे में पता चला तो उन्होंने दोनों को एक चिट्ठी और लिखने को कहा। गुरु अर्जन देव जी की लिखी चिट्ठी में पहले की तीनों चिट्ठियों जैसे काव्यात्मक गुण और अलौकिक भावनाएं थीं।

पहली तीनों चिट्ठियों में जहाँ गुरू पिता को मिलने की तीव्र इच्छा और लालसा का शानदार चित्र देखने को मिलता है, वहीं गुरू अर्जन देव जी की लिखी चौथी चिट्ठी में पिता मिलाप के बेमिसाल वर्णन सहजता और गुरू पिता के प्रति दर्शन व समर्पण की भावना उजागर होती है:

भाग होवा गुरु संत मिलाया
प्रभ अबिनासी घर महि पाया
सेव करी पल चसा न विछड़ा
जन नानक दास तुम्हारे जीओ
हउ घोली जीओ घोल घुमाई
जन नानक दास **तुम्हारे जीओ**

श्री गुरू अर्जन देव जी का जीवन सच, सिमरन, सेवा, सहज और गुरु के प्रति समर्पित कमाई वाला था। आप गुरमत ब्रह्म और गुरमत प्रकाश के साथ ओत-प्रोत होने के कारण आत्मिक मंडल के रस और आनंद से सरोबार, मिथ्या, वैर-विरोध, लोभ- मोह, अहम-अहंकार की वृत्ति की पकड़ से ऊपर थे। यही कारण है कि श्री गुरू रामदास जी ने अपनी जीवन-शैली और उच्च आत्मिक उड़ान को देखते हुए अपनी जागृत जोत अध्यात्मिक जुगत से आप में टिकाने का निर्णय लिया।

गुरू घर की महिमा में रंगे समकालीन भट्टों ने इस संबंध में गुरू-धर्म, गुरू-शक्ति, गुरू-लहर और गुरू-संस्था का वर्णन निम्न प्रकार से किया है:

रामदास गुरू जग तारन कऊ
गुरू जोत अर्जन माहि धरी।।

भन मंथरा कछु भेद नहीं
गुरू अर्जन प्रतख हरि।।

छत्र सिंहासन पृथ्मी
गुरू अर्जन को दे आयो।।

श्री गुरू अर्जन देव जी ने गुरू सिंहासन पर शोभायमान होकर उसी अध्यात्मिक जुगत को जारी रखा जिसकी नींव श्री गुरू नानक देव जी ने रखी थी। श्री गुरू अर्जन देव जी ने सरबत के भले के लिए, मानस-जाति के उत्थान के लिए, मानव धर्म की रक्षा के लिए, उच्च साहित्य, खुशहाल जीवन दर्शन और इतिहास के क्षेत्र में ऐसे सार्थक और सृजनात्मक कार्य किए जिसकी मिसाल और कहीं नहीं मिलती।

श्री गुरू रामदास जी के समय तक सिख धर्म का काफी प्रचार हो चुका था। सिख धर्म के उसूलों और उपदेशों का प्रचार करके लोग सिख धर्म के अनुआयी बन चुके थे। गुरू साहिब की बानी का निरंतर बढ़ता प्रभाव जन-साधारण में पसार पा चुका था। श्री गुरू अर्जन देव जी के समय सिख धर्म अपने पूरे यौवन पर उभर कर सामने आया। सन् 1588 ईस्वी में सचखंड श्री हरिमंदिर साहिब श्री अमृतसर की नींव रखी गई। इसकी स्थापना से यह सिख धर्म का एक केंद्रीय स्थान बन गया। बड़ी गिनती में श्रद्धालु दर्शनों हेतु आने लगे।

हरिमंदिर साहिब गुरू जोत की जीवन-पद्धति, सोच, चिंतन और ज्ञान-प्रकाश का प्रतीक है। इसकी विशेषता और विलक्षणता इसके रूप, स्वरूप का हर रंग अपने आप में संपूर्ण है।

हरिमंदिर में हरि वसै
सब निरंतर सोई
नानक गुरमुख वणजिए
सच्चा सौदा होई।।

(प्रभाती महला 3)

हरिमंदिर सोई आखीए
जिथे हर जाता
मानस देह गुरबचनी पाया
सब आत्म राम पछाता।।

(रामकली सिरी वार महला3)

हरिमंदिर हरि का हाट है
रखिया सूद सवारि
दिल विच सौदा इक नाम
गुरमुख लैन सवार।।

(प्रभाती महला3)

श्री गुरू अर्जन देव जी ने सन् 1604 ईस्वी में सरब सांझीवालता के लिए जुगो-जुग अटल, दीन-दुनिया के रक्षक, शब्द-रूपी बानी को बड़ी कलात्मक और दूरगामी दृष्टि से श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी का संपादन कार्य सम्पन्न कर दिया। इसका प्रकाश भी सचखंड श्री हरिमंदिर साहिब में कर दिया गया। इस ग्रंथ में बिना किसी भेद-भाव के गुरू साहिबान के इलावा हिंदुस्तान के और सच व धर्म से जुड़े संतों, महापुरुषों, पीरों -फ़कीरों और दरवेशों की बानी शामिल की गई।

श्री गुरू अर्जन देव जी आप एक महान साहित्यकार थे। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में आप द्वारा रचित बानी सबसे अधिक है। आप जी ने अनेकों छंद बेमिसाल ढंग से निभाए हैं। आप जी को रस, अलंकार वो रागों की गहरी समझ थी। इसके अतिरिक्त केंद्रीय पंजाबी, मुल्तानी, लहिंदी, फ़ारसी और संस्कृत का ज्ञान- आपको महान भाषा विज्ञानी होता दर्शाता है।

सिख धर्म की दिन-ब-दिन बढ़ रही शोभा समय के हुक्मरान जहाँगीर के कानों तक भी पहुँची। अपने दरबारियों और दीवान चंदू

की बातें सुनकर जहाँगीर ने गुरू जी को लाहौर बुलवा भेजा। चंदू ने मौक़ा देख कर जहाँगीर को भड़का दिया कि गुरु ग्रंथ साहिब में इस्लाम के विरुद्ध बातें दर्ज हैं और गुरू अर्जन देव हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की तैयारी कर रहे हैं। जहाँगीर ने गुरू अर्जन देव जी को श्री गुरू ग्रंथ साहिब में हज़रत मुहम्मद साहिब की प्रशंसा लिखने को कहा पर गुरू जी ने साफ़ इंकार कर दिया और कहा कि इस ग्रंथ में मात्र एक परमात्मा की महिमा की गई है न कि किसी व्यक्ति विशेष की। गुरू जी की दृढ़ता और निर्भयता को देख कर गुरू जी पर दो लाख रुपए जुर्माना भरने और सज़ा भुगतने के लिए तैयार रहने को कहा गया। गुरू जी सच के मार्ग से विचलित न हुए और अपनी कुर्बानी देनी उचित समझी।

जहाँगीर ने गुरू जी को अपने दीवान चंदू के हवाले कर दिया। अब चंदू के हाथ अपनी निजी दुश्मनी निकालने का मौक़ा हाथ लग गया क्योंकि गुरू जी की दिन-ब-दिन बढ़ती कीर्ति को देखते हुए लाहौर के दीवान चंदू लाल की तरफ से भेजे ब्राह्मण ने चंदू की लड़की की रिश्ता गुरू जी के सुपुत्र हरिगोबिंद जी के साथ पक्का कर दिया था। जब चंदू को इस बात का पता चला तो उसे बहुत बेइज़्ज़ती लगी, अपने आपको बड़ा जान कर चंदू ने गुरू घर के बारे में अपशब्द कहने और बुरा-बला कहने में कोई कसर न छोड़ी। नम्रता और परोपकार की मूरत श्री गुरू अर्जन देव जी तो स्तुति और निंदा से ऊपर थे पर सिख संगत को अहंकारी चंदू की गुरू-घर के बारे में उसकी की गई निंदा बुरी लगी और उन्होंने गुरू जी से निवेदन किया कि वे अहंकारी चंदू का यह रिश्ता तोड़ दें। गुरू जी की ओर से रिश्ते के इंकार होने पर चंदू जल-भुन गया और गुरू जी का दुश्मन बन गया था।

चंदू ने अपनी निजी दुश्मनी और हाक़िम के हुक़्मों की पालना की आड़ में गुरू अर्जन देव जी को असहनीय कष्ट देने का निर्णय कर लिया। अति भीषण गर्मी में आग से तपे तवे पर गुरू जी को बिठाया गया। उनके सिर पर गरम रेत डाली गई और देग़ में उबाला गया। शांति के मसीहा, नम्रता और परोपकार की मूरत गुरू जी अपने उसूलों पर कायम रहे। गुरू जी धर्म को कायम रखने की ख़ातिर प्रभु -चरणों में जा बिराजे।

-सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

नई शाखा

रानाघाट, पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल राज्य में बैंक की नई शाखा रानाघाट, जिला-नदिया का उद्घाटन 09 जुलाई, 2025 को माननीय भरत सिंह (आई.पी.एस), उप-मंडलाधिकारी, रानाघाट के कर कमलों से किया गया।

स्थापना दिवस समारोह 2025

24 जून, 2025 को पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने अपना 118वां स्थापना दिवस मनाया। बैंक के किदवई नगर, दिल्ली स्थित कॉरपोरेट कार्यालय में प्रातः शबद कीर्तन और अरदास की गई। स्थापना दिवस की संध्या पर कॉरपोरेट कार्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें पेशेवर कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय के सचिव श्री एम. नागराजू को आमन्त्रित किया गया था। बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा, कार्यपालक निदेशक श्री रवि मेहरा, कार्यपालक निदेशक श्री राजीवा, समस्त महाप्रबंधक तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस विशेष अवसर पर चंडीगढ़ में बैंक के कासा बैक ऑफिस का वर्चुअल लोकार्पण किया गया।

स्थापना दिवस समारोह 2025

उल्लेखनीय है कि 24 जून, 1908 को अमृतसर में दूरदर्शी समाज-सेवकों भाई वीर सिंह जी, सर सुंदर सिंह मजीठिया जी और सरदार तरलोचन सिंह जी द्वारा पंजाब एण्ड सिंध बैंक की स्थापना की गई थी। इस वर्ष बैंक ने अपने उच्च नैतिक मूल्यों और प्रथाओं के साथ राष्ट्र सेवा के उल्लेखनीय 118 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

कल्पना और वास्तविकता का समागम जिबली कला

राकेश चन्द्र नारायण

जिबली आर्ट ने सोशल मीडिया पर धूम मचा दिया है। अंग्रेजी बोलने वाले देशों में इसे घिबली या गिबली भी कहा जाता है। जिबली जापानी शब्द 'Ghibli' का मूल उच्चारण है। 'Ghibli' शब्द का मतलब है गर्म, तेज और शुष्क हवा जो सहारा रेगिस्तान में चलने वाली हवाओं के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस शब्द को जिबली आर्ट के संस्थापक हयाओ मियाजाकी ने इस सोच से रखा था कि वो जापान में एनिमेशन की दुनिया में एक नई और ताजगी देने वाली शक्ति लेकर आएंगे। जैसे तेज हवाएं अपने रास्ते में हर चीज को बदल देती हैं, जिबली आर्ट उसी तरह की लहर ले कर आएगी।

स्टूडियो जिबली जो एक जापानी एनिमेशन फिल्म स्टूडियो है, उसे वर्ष 1985 में हयाओ मियाजाकी, इसाओ तकाहाता और तोशियो सुजुकी ने मिलकर शुरू किया था। कंपनी हाथ से बनाई गई पेंटिंग्स की मदद से हाई क्वालिटी एनिमेशन फिल्में बनाने के लिए जानी जाती है। इसकी फिल्मों की खासियत होती है, खूबसूरत, ड्रीम-लाइक एनिमेशन, जो किसी परी कथा जैसी लगती है। स्टूडियो जिबली की सबसे लोकप्रिय फिल्मों में माई नेबर टोटोरो, स्पिरिटेड अवे और प्रिंसेस मोनोनोके हैं।

वर्ष 1988 में बनी "माई नेबर टोटोरो" कहानी दो बहनों, सत्सुकी और मेई के बारे में है जो अपने पिता के साथ एक नए घर में चली जाती हैं ताकि वे अपनी बीमार माँ के करीब रह सकें। वहाँ, वे जादुई प्राणियों, जैसे टोटोरो से मिलते हैं जो जंगल में रहते हैं। फिल्म दो युवा बहनों और युद्ध के बाद के ग्रामीण जापान में दोस्ताना लकड़ी की आत्माओं के साथ उनकी बातचीत पर केंद्रित है तथा दोस्ती, परिवार और प्रकृति के साथ संबंध के विषयों पर आधारित है। माई नेबर टोटोरो को दुनिया भर में आलोचकों की प्रशंसा मिली और इसने बॉक्स

ऑफिस पर दुनिया भर में $41 मिलियन से अधिक की कमाई की। इसे कई पुरस्कार मिले, जिनमें एनिमेज एनीमे ग्रांड प्रिक्स पुरस्कार, मैनिची फिल्म पुरस्कार और 1988 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए किनेमा जुनपो पुरस्कार शामिल हैं। यह फिल्म शीर्ष एनिमेशन फिल्मों में से एक मानी जाती है जिसे 2010 में एम्पायर पत्रिका की "विश्व सिनेमा की 100 सर्वश्रेष्ठ फिल्मों" में 41वाँ स्थान मिला और यह वर्ष 2012 के साइट एंड साउंड आलोचकों के सर्वकालिक महानतम फिल्मों के सर्वेक्षण में नंबर एक एनिमेटेड फिल्म बनी। टोटोरो, स्टूडियो घिबली के शुभंकर के रूप में भी काम करता है और इसे जापानी एनिमेशन में सबसे लोकप्रिय पात्रों में से एक माना जाता है।

वर्ष 2001 में बनी "स्पिरिटेड अवे" हयाओ मियाज़ाकी द्वारा लिखित और निर्देशित और स्टूडियो घिबली द्वारा निर्मित एनिमेटेड फिल्म है। कहानी दस साल की एक छोटी सी लड़की चिहिरो के रोमांच के बारे में है जो देवताओं और आत्माओं की दुनिया में भटकती है। यह फिल्म हयाओ मियाज़ाकी के निजी मित्र, निर्देशक सेजी ओकुडा की दस वर्षीय बेटी को खुश करने के लिए बनाई गई थी। फिल्म ने जापान में 31,680 बिलियन येन की भारी कमाई की। इसे कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले जिसमें बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में गोल्डन बियर पुरस्कार शामिल है। वर्ष 1997 में बनी "प्रिंसेस मोनोनोके" पर्यावरण और मानव संघर्ष पर आधारित एक गहरी फिल्म है। कई प्रकाशनों ने प्रिंसेस मोनोनोके को अपनी सर्वश्रेष्ठ फिल्मों की सूची में शामिल किया है। एनिमेज ने 2001 में अपनी 100 सर्वश्रेष्ठ एनीमे की सूची में इसे 47वां स्थान दिया। एम्पायर ने अपनी 500 महानतम फिल्मों की सूची में इसे 488वाँ स्थान दिया और इसे वर्ष 2024 की 50 महानतम एनिमेटेड फिल्मों की सूची में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। इस फिल्म को काफी प्रशंसा मिली ।

वर्ष 2004 में बनी "हाउल्स मूविंग कैसल" जादू और प्रेम की अनोखी कहानी। इसे हायाओ मियाज़ाकी ने लिखा और निर्देशित किया है। यह ब्रिटिश लेखिका डायना विने जोन्स के 1986 के उपन्यास पर आधारित है। फ़िल्म उपन्यास से कुछ अलग है; जबकि उपन्यास लिंग मानदंडों को चुनौती देने पर केंद्रित है। फ़िल्म प्रेम, व्यक्तिगत निष्ठा और युद्ध के विनाशकारी प्रभावों पर केंद्रित है। यह फिल्म 2004 में 61वें वेनिस फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शित हुई और 20 नवंबर 2004 को जापान में रिलीज हुई। जापान में रिलीज के पहले हफ्ते में फिल्म ने 14.5 मिलियन डॉलर की कमाई की। दुनिया भर में कुल 236 मिलियन डॉलर की कमाई हुई। फिल्म को अंग्रेजी में डब किया गया और 10 जून 2005 को वॉल्ट डिज़्नी पिक्चर्स द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में रिलीज किया गया। यह अब तक की सबसे व्यावसायिक रूप से सफल जापानी फिल्मों में से एक थी।

धीरे-धीरे पूरी दुनिया के लोग जापानी आर्ट एनिमेशन मूवी के मुरीद हो गए। सोशल मीडिया ने इस आर्ट को फिर से जिंदा कर दिया और ट्रेंड करने लगा। इसका श्रेय ओपेन एआई (OpenAI) के एआई चैटजीपीटी (AI ChatGPT) को जाता है जिसने जिबली आर्ट का फीचर लॉच किया था। जैसे ही चैटजीपीटी ने GPT-40 से जिबली स्टाइल में इमेज बनाने की क्षमता सबके लिए पेश की, यूजर्स ने इसका भरपूर फायदा उठाया। ये सुविधा पहले चैटजीपीटी के पेड यूजर्स (plus, pro और team सब्सक्राइबर) के लिए उपलब्ध थी। इसकी क्षमता विशेष रूप से आकर्षक थी क्योंकि यह हयाओ मियाजाकी के बनाए गए चित्रों जैसा इफैक्ट देता था जिसको बनाने में कई महीने लगते थे पर अब ये सेकंड में बन जाते हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की दुनिया में रोजाना नए टूल्स लॉन्च हो रहे हैं। एआई से फोटो और वीडियो बनाए जा रहे हैं। ओपेन एआई (OpenAI) के सुपरहिट एआई चैटजीपीटी (AI ChatGPT) ने नए इमेज जनरेशन फीचर से इंटरनेट पर धमाल मचा रखा है। सोशल मीडिया पर कई तस्वीरें वायरल हो रही हैं। जिबली स्टाइल फीचर के लिए GPT-40 मॉडल टेक्स्ट-टू-इमेज और इमेज-टू-इमेज जेनरेशन दोनों में प्रॉम्प्ट यानि कमांड को सपोर्ट करता है अर्थात यह टेक्स्ट और इमेज दोनों को समझता है। टेक्स्ट-टु-इमेज का मतलब है कि जैसी इमेज चाहिए, उस तरह की डिटेल लिख कर देने पर उसी तरह का इमेज बना देना। जैसे किसी ने लिखा कि जंगल में छोटी सी बच्ची परी के साथ जिबली स्टाइल में दिखाए तो कुछ ही सेकंड में इमेज बन कर आ जाएगी। इसी तरह कोई भी अपनी फोटो अपलोड कर उसे जिबली स्टाइल में बना सकते हैं।

यह टेक्नोलॉजी डीप लर्निंग और न्यूरल नेटवर्क्स पर आधारित है जो स्टूडियो जिबली की फिल्मों के हजारों फ्रेम को स्कैन करके उसकी स्टाइल में ट्रेन हुई है। फ्री यूजर्स के लिए इसमें कुछ सीमाएं हैं जैसे कि इससे दिन में सिर्फ तीन इमेज बनाया जा सकता है। मेरी पहले छवि को इसने तुरंत जेनरेट कर दिया किंतु जब मैंने इसे छवि को बदलकर मुझे पतला करने को कहा तो इसने ज्यादा समय लगा दिया। यहाँ याद रखना होगा कि प्रॉम्प्ट, एआई का दिमाग है। अगर इसे सही प्रॉम्प्ट नहीं मिलेगा तो यह मनचाहा परिणाम नहीं देगा । सब अपनी तस्वीरों को स्टूडियो जिबली स्टाइल में बदल रहे हैं। यह फीचर खासतौर पर उन लोगों के लिए शानदार है जिन्हें डिजिटल आर्ट, ग्राफिक्स डिजाइन और सोशल मीडिया कंटेंट क्रिएशन में दिलचस्पी है। पीएम मोदी, सचिन तेंदुलकर, राजपाल यादव से लेकर कई नेताओं और सेलिब्रिटीज़ की फोटो जिबली स्टाइल में इंस्टाग्राम पर तहलका मचा रही हैं। इसका इस्तेमाल निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है:

1. सबसे पहले अपने फोन पर ChatGPT एप इंस्टॉल करें या कम्प्यूटर पर ChatGPT की वेबसाइट (chat.openai.com) खोले। यदि इसमें आपका अकाउंट नहीं है तो साइन-अप करें।
2. ChatGPT के इंटरफेस पर आपको एक + (प्लस) बटन दिखेगा। इस पर क्लिक करें और तस्वीर चुने। तस्वीर साफ़ होनी चाहिए ताकि एआई इसे अच्छे से प्रोसेस कर सके।
3. अब आपको एआई को समझाना होगा कि आपको क्या चाहिए। प्रॉम्प्ट यानि वह कमांड जो आप एआई को देंगे। अगर आप अपनी तस्वीर को बदलना चाहते हैं तो लिखें "Turn this image into studio Ghibili style." (इस तस्वीर को स्टूडियो जिबली स्टाइल में बदल दें)।
4. इसके बाद सबमिट पर क्लिक करें। एआई जिबली स्टाइल का इमेज बना देगा। आप सिर्फ अपनी तस्वीरें ही नहीं, बल्कि कुछ नया भी बना सकते हैं। जैसे, खुद की समुद्र में क्रिकेट खेलने की इमेज बनवा सकते हैं।

इस तरीके से इतनी ज्यादा इमेज जेनरेट की जा रही है कि ओपेनएआई (OpenAI) के एआई चैटजीपीटी (AI ChatGPT) ने कुछ महीने पहले हार मान ली थी और यह ठप हो गया था। ओपेन एआई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सैम अल्टमैन को सफाई देनी पड़ी और उन्होंने अपने ट्विटर पर लिखा "गाइज जरा आराम करो। लोग इतनी ज्यादा इमेज जेनरेट कर रहे है कि हालात बेकाबू हो गए हैं। ये पागलपन है, हमारी टीम को सोने की जरूरत है। हमारी टीम बिना रुके काम कर रही है ताकि सर्वर चालू रहे"।

समान्य से घिबली कला

जिबली आर्ट के फाउंडर हयाओ मियाजाकी ने एक बार एआई जनरेटेड तस्वीरों को लेकर बेहद कड़ी आलोचना की थी और इसे जीवन का अपमान बताया था। वो मानते हैं कि कला का असली सार तभी झलकता है जब इंसान अपने अनुभवों, दर्द, खुशी और संवेदनाओं को चित्रों और कहानियों में उतारता है लेकिन एआई आधारित एनिमेशन इस गहराई से कोसों दूर है। एआई को लेकर दुनिया भर में बहस जारी है। कुछ लोग इसे क्रिएटिव इंडस्ट्री में क्रांति मानते हैं तो कुछ इसे कला के लिए खतरा बताते हैं। मियाजाकी जैसे कलाकारों का मानना है कि एआई कभी भी इंसानी भावनाओं समझ ही नहीं सकता और इसलिए वह असली आर्ट से पीछे रह जाएगा लेकिन ज़्यादातर लोग मानते हैं कि जिबली आर्ट हमें वह बनाती है जो हम अपने सपनों में बनना चाहते है। यह अनुभव, खुद को एक नई नज़र से देखने में भी मदद करता है। यह एहसास दिलाता है कि हमारी साधारण सी नज़र आने वाली जिंदगी में भी कितनी खूबसूरती छिपी हुई है।

किसी भी ट्रेंड का हिस्सा बनना करोड़ों लोगो से जुड़ने का जरिया है। इसमें एक जादुई एहसास है। लाखों लोग जो एक-दूसरे को नहीं जानते, वो एक साझा अनुभव से जुड़ जाते हैं। जब कोई अजनबी का पोस्ट देखता है और उस पर अपनी प्रतिक्रिया देता है तो एक रिश्ता बन जाता है। ये हमें यह याद दिलाता है कि दुनिया में और भी लोग हैं जो हमारी तरह छोटी-छोटी बातों में खुशियाँ ढूंढते हैं। हयाओ मियाजाकी, इसाओ तकाहाता और तोशियो सुजुकी ने अपनी सोच को दुनिया की सोच से मिलाना चाहा था। वो भी चाहते थे कि कल्पना और वास्तविकता का अनोखा मेल हो। आज जो जिबली दुनिया बनाई जा रही है वो भी वैसी ही है। भले इसके टूल्स एआई हों लेकिन सोच इंसानी है, रंग काल्पनिक हो सकते हैं लेकिन सांचे असली हैं। यहाँ कल्पना और वास्तविकता, सहजता से मिलते हैं।

-भूतपूर्व महाप्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

बैंक के बढ़ते पदचिह्न/ नई शाखाएं

चंद्रशेखरपुर, ओड़िशा

24 जून, 2025 को ओड़िशा सरकार के माननीय खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री कृष्ण चन्द्र पात्रा के कर कमलों से ओड़िसा में बैंक की नई शाखा चंद्रशेखरपुर, जिला-खुर्दा का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर बैंक के क्षेत्र महाप्रबंधक श्री विनोद कुमार पाण्डेय तथा आंचलिक प्रबंधक विजयवाड़ा श्री विनय खंडेलवाल भी उपस्थित रहे।

केंद्रपाड़ा, ओड़िशा

ओड़िशा राज्य में बैंक की 23वीं शाखा केंद्रपाड़ा का उद्घाटन श्री त्रिभुबन जयसिंह (ओ.आर.एस.), सहायक कलेक्टर, केंद्रपाड़ा द्वारा किया गया।

कूचबिहार, पश्चिमबंगाल

14 जुलाई, 2025 को बैंक की कूचबिहार शाखा का उद्घाटन माननीय श्री द्युतिमान भट्टाचार्य, पुलिस अधीक्षक, कूचबिहार और माननीय श्री सौमेन दत्ता, अपर जिलाधिकारी के कर कमलों से किया गया।

संसदीय राजभाषा समिति का देहरादून दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति ने 16 जून, 2025 को बैंक के आंचलिक कार्यालय देहरादून का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। निरीक्षण कार्यक्रम में माननीय सदस्यों ने गहनतापूर्वक बैंक कार्यालय में हो रहे हिंदी कार्यों की समीक्षा की और यथोचित निर्देश दिए।

संसदीय राजभाषा समिति का देहरादून दौरा

उक्त कार्यक्रम में वित्तीय सेवाएं विभाग की ओर से उप सचिव श्री धीरज भास्कर, उप निदेशक (राजभाषा) श्री धर्मबीर तथा बैंक की ओर से महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर, आंचलिक प्रबंधक देहरादून श्री अक्षित चौधरी, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा और आंचलिक कार्यालय देहरादून में पदस्थ राजभाषा अधिकारी श्री मोहन लाल उपस्थित रहे।

काव्य-मंजूषा

व्यस्त जिंदगी

अच्छी थी, पगडंडी अपनी
सड़कों पर तो जाम बहुत है।

फुर्र हो गई फुर्सत अब तो
सबके पास, काम बहुत है।

नहीं जरूरत, बूढ़ों की अब
हर बच्चा, बुद्धिमान बहुत है।

उजड़ गए सब बाग बगीचे।
दो गमलों में, शान बहुत है।

मट्ठा, दही, नहीं खाते हैं
कहते हैं, ज़ुकाम बहुत है।

पीते हैं, जब चाय, तब कहीं
कहते हैं, आराम बहुत है।

बंद हो गई, चिट्ठी, पत्री
व्हाट्सएप पर पैगाम बहुत है।

आदी हैं ए.सी. के इतने
कहते बाहर, घाम बहुत है।

झुके-झुके, स्कूली बच्चे
बस्तों में, सामान बहुत है।

नहीं बचे, कोई सम्बन्धी
अकड़, ऐंठ, अहसान बहुत है।

सुविधाओं का, ढेर लगा है
पर इंसान, परेशान बहुत है।

- स्वाती गुप्ता, प्रबंधक
सनमार्ग लखनऊ

ज़िंदगी का दस्तूर

वो दस्तूर मोहब्बत की
काश तुम्हें समझा पाता,
हर रोज पास होकर दूर जाने की
तकलीफ तुम्हें बता पाता।

तुम जो सीने से लगकर
अपना दिल छोड़ गए हो मुझमें,
उसे संभालने में फिक्र में
जतन भारी बता पाता।

कोई इम्तिहान रख ही लो
परखने का मुझे अब की बार,
हर रोज जो मेरा एतबार परखते हो
काश तुम्हें बता पाता।

हूं बहुत लापरवाह पर
तेरी हर बात का ख्याल करता हूं,
मैं जो तुमसे इश्क बिना शर्तों के
बेहिसाब करता हूं।

काश रगो में उतरकर
धमनियों से होकर गुजरती तुम,
फिर ताउम्र साँसों में बसकर
मेरी धड़कनों को पढ़ती तुम ।

-अतुल कुमार
सहायक महाप्रबंधक
शाखा जॉर्ज टाउन, चेन्नै

ग्राहक के मुख से

आज के समय में चाहे वो एक देश की अर्थव्यवस्था हो या कोई सामान्य व्यक्ति, बिना उचित बैंकिंग प्रणाली के सुचारू रूप से नहीं चल सकते। पंजाब एण्ड सिंध बैंक एक शताब्दी से ज्यादा समय से भारत के आर्थिक उत्थान का गवाह रहा है। इस बैंक के साथ जुड़ना किसी सौभाग्य से कम नहीं है वो चाहे विभाजन के बाद बदला आर्थिक परिदृश्य हो, बाहरी हमलों के कारण आर्थिक तनाव हो, नब्बे के दशक के आर्थिक सुधार हो या फिर नब्बे के दशक के अंत में परमाणु परीक्षण के बाद भारत पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंध हो। समय-समय पर होने वाले शेयर मार्केट संकट और कोरोना काल के लॉकडाउन ने हमारी अर्थव्यवस्था को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है, पंजाब एण्ड सिंध बैंक न केवल इन घटनाओं का गवाह रहा बल्कि इनके दुष्प्रभावों का मजबूती से सामना करके भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में इसने सदैव अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया है।

मुझे खुद इस बैंक के साथ आज करीब दस साल हो चुके है। पंजाब एण्ड सिंध बैंक के द्वारा मुझे समय-समय पर वित्तीय और अन्य बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराई गई है जिसके कारण मेरा कारोबार फल-फूल पाया है। खास तौर पर कोरोना काल में बैंक ने जिस तरह आगे रहकर मुश्किल में पड़े ऋण धारकों की मदद की थी, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। सच में बैंक ने अपनी टैग लाइन '*जहां सेवा ही जीवन ध्येय है* के अनुरूप सेवा भावना का परिचय दिया है। बैंक द्वारा उपलब्ध कराया गया ऑन-लाइन प्लेटफॉर्म पी. एस. बी. यूनिक (यू एंड आई कनेक्ट) बहुत ही भरोसेमंद है। ये एक ऐसा डिजिटल बैंकिंग समाधान है जहां हम इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई का उपयोग कर सकते है, कुछ पलों में ही लाखों रुपए की धन राशि सुरक्षित रूप से कहीं भी भेज सकते है। समय के साथ-साथ इस एप पर कई आधुनिक सुविधाओं को जोड़ा जा रहा है।

मेरा कार्य प्रिंटिंग से संबंधित है और मुझे आए दिन सरकारी और गैर सरकारी बैंकों द्वारा प्रिंटिंग के कार्य मिलते रहते है। उन बैंकों द्वारा मुझे उनकी बैंकिंग सेवा से जुड़ने के लिए आग्रह किया जाता रहता है लेकिन मेरा मन कहीं और जाने का होता ही नहीं है। व्यवसाय आरंभ करने से लेकर इसके विस्तार व लाभार्जन की स्थिति तक बैंक ने प्रत्येक स्तर पर मेरी सहायता की है। आज स्थिति यह है कि मेरी जान पहचान का कोई ऐसा व्यक्ति शहर में नहीं बचा है जिसे मैंने इस बैंक से नहीं जोड़ा हो। इन वर्षों के दौरान बैंक के शाखा प्रभारी और अन्य स्टाफ सदस्यों का नियमित अंतराल में ट्रांसफर होता रहा है और देश के विभिन्न प्रदेशों के लोगों की तैनाती यहाँ हुई है लेकिन इससे बैंक की सेवा भावना में कोई कमी नहीं आई। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि हमारा बैंक आगे भी इसी तरह फलता-फूलता रहे और पंजाब एण्ड सिंध बैंक का नाम भारतीय बैंकिंग व्यवस्था का अभिन्न अंग बना रहे।

-मेहरबान सिंह
प्रोपराइटर, शिवओम फोटोकॉपी
भोपाल नाका, सीहोर, मध्यप्रदेश

राजभाषा पुरस्कार

शाखा महाराजपुर (मध्यप्रदेश) को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर द्वारा वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु शाखा वर्ग में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि शाखा महाराजपुर को लगातार तीसरे वर्ष नराकास से राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुआ है। नराकास अध्यक्ष से शाखा प्रभारी श्री सौरभ सिंघई तथा अधिकारी सुश्री सुषमा कौरव ने क्रमशः शील्ड और प्रमाण-पत्र प्राप्त किए।

बैंक की शाखा इटारसी (मध्यप्रदेश) को वर्ष 2024 की द्वितीय छमाही के दौरान शाखा में राजभाषा कार्यान्वयन के आधार पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति इटारसी से सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। छायाचित्र में शाखा इटारसी के स्टाफ सदस्यों के साथ शाखा प्रबंधक श्री रोमेंद्र सरवैया दृष्टव्य हैं।

राजभाषा पुरस्कार

वर्ष 2024-25 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए बैंक की मुख्य शाखा मेरठ को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), मेरठ द्वारा बैंक शाखा कार्यालय संवर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। नराकास अध्यक्ष के कर कमलों से यह पुरस्कार मुख्य प्रबंधक श्री भूपेन्द्र कुमार गौतम तथा राजभाषा अधिकारी श्री शिव शरण शिव ने प्राप्त किया।

बैंक की शाखा हींग की मंडी, आगरा को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), आगरा द्वारा आयोजित वार्षिक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता 2023-24 में बैंक शाखा कार्यालय संवर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिनांक 25.04.2025 को आयोजित नराकास की छमाही बैठक में नराकास अध्यक्ष के कर कमलों से शाखा प्रबंधक श्री बजरंग जाट तथा आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम में पदस्थ राजभाषा अधिकारी श्री अनिल शुक्ला ने क्रमश: शील्ड व प्रमाण-पत्र प्राप्त किए।

बढ़िया है!

उपेन्द्र कुमार सिन्हा

'बढ़िया है' कहना एक विशिष्ट संस्कृति की पहचान है। हमारे साहित्य के शिक्षक बताया करते थे कि नाटक और कहानियों के दो पक्ष होते हैं, सुखांत और दुखांत। पश्चिमी साहित्य में दुखांत पर अधिक जोर होता है क्योंकि वह पात्रों और चरित्र को उधेड़ देने में विश्वास करते हैं। संसार में जो कुछ जैसा है वैसा ही प्रस्तुत करना। यदि जगत में बुराइयों का, शोषण का, दर्द का बोलबाला है तो साहित्य में, कला में भी वही छलकेगा। पूरब में और विशेष कर भारत में चीजों की प्रस्तुति में एक पर्दा रखा जाता है। संसार की गति जो हो, साहित्यकार उसे छिपाकर पेश करता है ताकि गंदगी सिमटी रहे। यही वजह है कि हमारे साहित्य का अधिकांश सुखांत ही होता है और यह रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों में, कालिदास के नाटकों के उपसंहार में परिलक्षित है। इसीलिए 'बढ़िया है' का वाक्यांश उसी सोच की परिणति से उत्पन्न होता है। हमारा सुखांतकी परिवेश ही जीवंत पात्रों की भाषा-बोली तय करता है। मेरा मानना है कि 'बढ़िया है' कहने वालों पर हमारी इसी संस्कृति का प्रभाव है जो जाने-अनजाने उनकी जिह्वा पर आ जाती है।

कुछ लोगों के लिए 'बढ़िया है' उनका तकिया कलाम होता है। उनका समय, परिवेश, घटना, दुर्घटना, सुख-दुःख किसी परिस्थिति से कोई सरोकार नहीं होता है। कहीं किसी ने किसी परिचित की मृत्यु के विषय में बताया, आप कहेंगे 'बढ़िया है'। कोई आपको परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहने की व्यथा से अवगत कराता है पर आप कहेंगे 'बढ़िया है'। किसी ने भाइयों से विवाद की बात कही पर आपके मुखारविंद पर वही 'बढ़िया है'। ऐसे जालिम लोगों के लिए किसी की तकलीफ़ से कोई वास्ता नहीं होता, उनका तकिया कलाम मुख्य होता है। अब किसी को उनकी आदत से बुरा लगता हो तो यह उनकी अपनी समस्या है। उनका 'बढ़िया है' बदस्तूर चलता रहेगा।

मेरे मित्र हैं जो घंटों गप्प मारने के आदी हैं और बड़ी बात यह है कि अंत में उठते-उठते कहेंगे 'बढ़िया है'। अब बेसिर पैर की बातचीत में बढ़िया क्या होगा पर तकिया कलाम समझिए या उनकी गूढ़ दृष्टि में तत्व ढूंढकर बढ़िया जान लेने की शक्ति, बात का अंत 'बढ़िया है' पर ही समाप्त होगा। यह सिर्फ उनकी बात नहीं है, बहुत से लोग हैं जो 'बढ़िया है' बोलते हैं। किसी के घर गए, घर वालों ने बताया कि

आपके मित्र की तबीयत ठीक नहीं है और अस्पताल में हैं, आगंतुक ने कहा 'बढ़िया है'।

यह भी संभव है कि असमंजस की अवस्था में 'बढ़िया है' कह दिया जाए। अगर पूछ लिया जाए कि बढ़िया क्या है तो शायद उत्तर न मिले क्योंकि बढ़िया को बढ़िया तो कहा नहीं गया, यह मात्र इसलिए कह दिया गया कि समय के अभाव में बातों पर विराम लगाया जाए। ऊहापोह में कथित 'बढ़िया है' कभी-कभी घातक भी प्रमाणित हो सकता है क्योंकि जिनकी विदाई 'बढ़िया है' कहकर किया गया है आप उनके प्रिय शिकार बन चुके हैं। जब भी उनको अवसर मिलेगा, वह प्रकट होकर आपके समय की ऐसी-तैसी कर देंगे और आपके असमंजस से एक और 'बढ़िया है' प्राप्त कर लेंगे किंतु यदि आपने पूर्ण मनोयोग से सुनकर सत्य बोलकर 'बढ़िया है' न कहकर उन्हें निराश कर दिया तो समाज में आपके विषय में ऐसी जानकारी फैला देंगे जिससे आप भी अनभिज्ञ होंगे। उनके विषय ज्ञान पर यह प्रहार अंततः आपके व्यक्तित्व को ही झकझोरने लगेगा।

कभी-कभी 'बढ़िया है' कहना एक विवशता भी होती है। विशेषकर यदि बोलने वाला व्यक्ति सामाजिक सोपान में आपसे श्रेष्ठ व्यक्ति हो, यह श्रेष्ठता विपुल धन से अर्जित हो या राजनैतिक प्रभाव से या फिर दबंग चरित्र से। वहां 'बढ़िया है' कह कर निकल जाना निरापद विकल्प है क्योंकि वह वार्ता के साथ के लिए नहीं वार्ताकार की स्थिति के लिए कहा गया है। चूंकि कोई विकल्प है ही नहीं तो इस 'बढ़िया है' का शाब्दिक अर्थ होता भी नहीं। यह तो सम्मान के उद्गार हैं जो परिस्थिति के अधीन कहे गए हैं। अब अगर कोई व्यक्ति आपके विचारों के लिए 'बढ़िया है' कहे तो इस मुगालते में न रहें कि वह आपका समर्थन कर रहा है अथवा आपसे प्रभावित है, हो सकता है कि वह मुक्त होना चाहता हो आपकी सोहबत से और 'बढ़िया है' कहकर निकलना चाहता हो।

'बढ़िया है' कहने वालों के लिए यह भ्रम न पाला जाए कि उनकी सोच भी बढ़िया ही होगी। कितने ऐसे मिलेंगे जिनका जीवन अनावश्यक शिकायत का पुराण होगा अथवा जो समाज में अपनी जंगी प्रवृत्ति की वजह से अवांछित होंगे पर वह भी यही कहेंगे कि 'बढ़िया है' जबकि उनका 'बढ़िया है' सामाजिक आदर्शों के सर्वथा प्रतिकूल होगा। वह बेमतलब विवाद को भी बढ़िया मानते हैं। उनकी दृष्टि में किसी का अपमान कर देना, लोगों का उपहास उड़ाना, सब बढ़िया है क्योंकि

उनकी सोच पर उनकी फितरत इतना प्रभावी होता है कि जो अच्छा है, सदाचार है वह तो बढ़िया होता ही है, जो फालतू है, दुराचार है वह भी बढ़िया ही है। अर्थात उनके इस 'बढ़िया है' उच्चारण की पृष्ठभूमि में उनकी कुत्सित भावना अधिक प्रबल होती है।

इसके विपरीत कुछ वीतरागी व्यक्तित्व भी सब में बढ़िया देखने के आदी होते हैं। किसी को बढ़िया कह देने से वह बढ़िया हो न हो, बने न बने, आत्म तोष होता है कि हमने अपने चरित्र को सामने वाले से पृथक रखा है। उसकी सोच में जो भी भरा हो, 'बढ़िया है' कहने से उसकी सोच के प्रहार से स्वयं मुक्त हो जाने का भाव पैदा होता है। इसलिए इनकी बातचीत में 'बढ़िया है' कहना आत्म-सुरक्षा से प्रेरित होता है। यह वाक्य उनके लिए कवच की तरह है। किसी आगंतुक को उसकी बातचीत के लिए 'बढ़िया है' की उपाधि देकर स्वयं को उनसे बचा लेना अधिक महत्वपूर्ण है।

'बढ़िया है' कहने वालों में कितनी बार उपालंभ का भाव भी निहित होता है। लंबी चर्चा के बाद भी जब कोई रस अथवा ज्ञान न मिले तो वार्ता के अंत के लिए 'बढ़िया है' निरापद उपसंहार है। इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि वार्ता में उबाल देने वाली बात होने के बाद उसे स्वीकार कर लिया गया है। सामने वाला भी प्रसन्न होता है कि जिन बातों को वह स्वयं नहीं समझ पाया, इस भले आदमी ने समझ भी लिया और टीका कर यह बता दिया कि बातों में रस था, तत्व था। इसे परोपकार ही माना जाए कि अनर्गल प्रलाप को भी एक आदर्श का स्वरूप देकर उसे 'बढ़िया है' बता दिया गया। इसमें एक जोखिम है कि जिस भाई के तत्वहीन बात में उसे 'बढ़िया है' की उपाधि मिल

गई है, वह समाज के लिए कितना ख़तरनाक सिद्ध होगा क्योंकि वह आत्म मुग्ध होकर पता नहीं समाज के कितने लोगों को अपनी प्रगल्भ वाणी से दग्ध करता रहेगा और अपेक्षा भी रखेगा कि सब उसे 'बढ़िया है' ही स्वीकार करें जबकि समाज में इतने परोपकारी जीव तो होते नहीं लेकिन यह साहब तो अपने आपको वक्ता मानकर अन्यथा टिप्पणी करने वाले को अल्पज्ञ मान लेंगे इसलिए 'बढ़िया है' के प्रयोग में संयम की आवश्यकता है।

असल बात यह है कि इंसान मूलतः इंसान होता है। उसे वह सब अच्छा लगता है जिससे किसी का भला हो। परोपकार की भावना से ही इंसानियत जुड़ी होती है। जब भी इस सीधे सरल रास्ते पर चलना कठिन होता है तो जो कर्मजीवी होते हैं, सत्य मार्ग की खोज करने लगते हैं ताकि सत्य के अनुसरण से अपने आपको सांसारिक बुराइयों से दूर रखें पर कुछ ऐसे भी होते हैं जो ऐसी दिशा में भटक जाते हैं जो न उनके लिए और न समाज के लिए कल्याणकारी होता है। यहीं से समाज में व्यतिक्रम पैदा होता है। अब पलायन वादियों के पास एक ही तर्क बचता है कि उनका मार्ग चाहे समाज के लिए सही हो न हो किंतु उनके लिए तो बढ़िया है। पलायन वादी के 'बढ़िया है' में कुछ भी बढ़िया नहीं होता क्योंकि सामाजिक सरोकारों से वंचित उनकी सोच से समाज को कोई लाभ नहीं मिलता और दीर्घकाल में उनके अस्तित्व को भी उनका पलायन निगल जाता है।

बहुत से लोग ऐसा मान कर चलते हैं कि पृथ्वी पर जो भी होता है, ठीक होता है। उनकी आस्तिकता में प्रच्छन्न होता है कि ईश्वर जो करते हैं, ठीक करते हैं। व्यक्ति विशेष के लिए यह सही हो सकता है पर जिस समाज में गरीबी, रोग, अशिक्षा का तांडव हो रहा हो, महिलाओं के लिए सुरक्षित वातावरण न हो, आतंक का राज हो, वहां यह ईश्वरीय वरदान मानकर 'बढ़िया है' कहना कदाचित उचित नहीं माना जा सकता। ज्ञानी गण गरीबी को, आतंक के शिकार को प्रारब्ध बताते हैं। कोई व्यक्ति किसी रोग अथवा दुर्घटना से मृत हो जाए और हम उसे मुक्त होना बता दें तो यह मृतक के अपमान के अतिरिक्त कुछ नहीं। आस्था और पलायनवाद में अंतर है, आस्था हमें ईश्वर की शक्ति को समझने और उसे अपने व्यक्तित्व में आत्मसात करने के लिए प्रेरित करता है। गरीबी, रोग, अशिक्षा आदि को ईश्वरीय तथ्य मानना कुतर्क है क्योंकि ये सांसारिक प्रवृत्ति है जिसका सांसारिक हल होना चाहिए। ऐसी परिस्थिति से उभरने के लिए ईश्वर के बंदों को सामूहिक प्रयास करना चाहिए न कि इसे ईश्वरीय विधान बताकर 'बढ़िया है' कहकर कन्नी काट ली जाए। सुप्रयास, संकल्प, ईश्वरीय शक्तियां हैं जो कमज़ोर व्यक्ति को साहस और समर्थन प्रदान करते हुए उसे सहारा देती है और जब यह संकल्प चरितार्थ होकर संसार में दुःख का निवारण करता है तो सबसे अधिक प्रसन्न ईश्वर होते हैं, यहां तक कि ऐसे प्रयासरत साधु जन स्वयं ईश्वर का प्रतिरूप बन जाते हैं।

गौतम बुद्ध ने "सब दुःखी हैं" मानकर उनकी मुक्ति के मार्ग की खोज की और फिर सबको बताया कि दुःख है तो कोई कारण होगा और कारण का निवारण कर लो तो दुःख भी समाप्त हो जाएगा। उनके तप और परोपकार ने उनको ही ईश्वर का रूप घोषित कर दिया। ईश्वरीय विधान अपने सृजन से यही मांगता है और यदि ऐसा होता है तो कहने में गर्व होता है कि 'बढ़िया है'।

सार है कि 'बढ़िया है' सभी व्यवस्थाओं में अपना स्थान बना कर रखता है। वाद निरपेक्ष मानकर यह कहना पड़ता है कि व्यापक लौकिक अनुप्रयोग के बावजूद 'बढ़िया है' में अलौकिक होने के सभी गुण हैं। शेक्सपियर का कोई दुखांत नाटक आपने पढ़ा और कहा 'बढ़िया है'। यहां प्रस्तुति, कथोपकथन, संवाद को बढ़िया कहा जा रहा है न कि उपसंहार को। कोई सुखांत कहानी पढ़ी या कविता पढ़ी और कहा 'बढ़िया है' तो आप पूरी विधा को, सार को संबोधित कर रहे हैं। यही 'बढ़िया है' मजाक के तौर पर या उलाहने के तौर पर कहा जा सकता है तो कभी वास्तव में प्रशंसा के भाव से। मतलब 'बढ़िया है' स्वयं में इतना विस्तारित अर्थ रखता है कि कहना पड़ता है 'बढ़िया है'।

इतनी विवेचना से कुछ बातें साफ है कि 'बढ़िया है' में सकारात्मक सोच भी है और प्रशंसा का भाव भी। यह चलताऊ विचार भी हो सकता है तो समर्थन के लिए भावना भी। सत्य, निष्ठा, परोपकार को भी समाहित करता है तो यदा-कदा परिस्थितिजन्य उद्गार भी जिसमें विचार और सोच का अभाव होता है पर उस परिस्थिति से शीघ्र मुक्त होने की इच्छा भी। कभी-कभी सामाजिक वर्जनाओं के भय से छिपने और शरणागत होने की चाहत भी, अर्थात ये शब्द पूरी साहित्यिक भंगिमा हैं। विचार सभागार में या गोष्ठियों में 'बढ़िया है' सुनने के लिए सभी प्रतिभागी उत्कट रहते हैं और उनकी सफलता का मापदंड भी यही 'बढ़िया है' होता है। अन्य परिस्थिति में भी इन शब्दों का व्यापक महत्व है। घर में परोसे गए खाने पर यदि 'बढ़िया है' की टिप्पणी नहीं दी गई तो पति-पत्नी के मध्य सह संबंध कठिन हो सकते हैं। वहां इसका कोई विकल्प नहीं है कि कहा जाए 'बढ़िया नहीं है'। 'बढ़िया है' इस स्थिति के लिए पारिवारिक शांति के लिए शाश्वत शब्द है। विद्यालय की कक्षा में शिक्षक द्वारा किसी छात्र के लिए यह टिप्पणी 'बढ़िया है' उस छात्र विशेष के लिए गौरव की वस्तु है परंतु जिनके लिए यह नहीं कहा गया वह समाजवाद के मूल सिद्धांतों की ऐसी-तैसी कर देता है क्योंकि ये दोनों शब्द कक्षा में छात्रों के बीच खाई का निर्माण कर देता है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं लिया जाए कि 'बढ़िया है' समाजवाद के विपरीत वाद का समर्थक है। समाजवाद में मजदूर एकता, सर्वहारा की युति 'बढ़िया है' तो पूंजीवाद में अपने आपको प्रतियोगी बनाओ तो बढ़िया है।

अंतत: यह चर्चा ही बेमानी है कि क्या बढ़िया है क्योंकि बढ़िया का सर्व-स्वीकृत पैमाना बना ही नहीं है और किसी भी वस्तु, विचार, कृति और व्यक्तित्व में और बढ़िया होने की असीम शक्ति निहित होती है। सारांश है कि 'बढ़िया है' का अर्थ है, अर्ध-विराम। पूर्ण विराम तो संभव ही नहीं है और यह समझने के लिए प्रकृति को देखिए, असीम, अनंत एक बढ़िया परिदृश्य और फिर उससे श्रेष्ठ दृश्य, बढ़िया और बढ़िया और बढ़िया देखते जाइए, पटल खुलता जाएगा और ज्ञान भी। अब यदि 'बढ़िया है' सुनें तो मान लीजिए, अभी और प्रयास की आवश्यकता है।

- वरिष्ठ प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय भोपाल, मध्यप्रदेश

यादों की मधुर टीस

चमचमाती चांदनी रात है
तुम तो नहीं हो, पर तुम्हारा एहसास है
सब चुप हैं, सन्नाटा है
और मैं यादों की मधुर टीस लिए
एकटक आसमान निहारा करता हूं।

चाँद की खूबसूरती में मुझे तुम दिखाई देते हो
यह रूप मेरे हृदय के तार को झंकृत कर देता है
रात बीत जाती है
और मैं आभाहीन चाँद को देखते हुए
ठगा सा रह जाया करता हूं।

नभ पर उड़ते खगों के कलरव से भोर हो जाती है
शीतल बयार में मैं स्मृतियों की पोटली कस रहा होता हूं
और तुम...
तुम यहां...
तुम यहां कैसे सोचता मन ध्वनि की दिशा में
खिड़की से दरवाजे की ओर चल पड़ता है
देखकर चेहरे पर मुस्कान आती है
और मैं बरामदे में खड़े होकर
कोकिल की कूक में तुम्हें सुना करता हूं।

आलोक कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
शाखा सुभाष नगर, नई दिल्ली

संथाल हुल के शहीदों की शौर्य गाथा

यशोदा मुर्मु

स्वतंत्रता संग्राम के अनेक आदिवासी क्रांतिवीर आज भी इतिहास में गुमनाम है। अभी के झारखंड राज्य में स्थित संथाल परगना और आसपास के संथाल आदिवासियों का इतिहासकारों ने स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में खास जिक्र नहीं किया है। इसी कारण से लोग इनके योगदान और शौर्य से अंजान हैं। कुछ क्षेत्रीय इतिहासकारों द्वारा लिखित पुस्तकों में कहीं-कहीं इनका संक्षिप्त वर्णन मिलता हैं तथा क्षेत्रीय भाषाओं में इनके बलिदान की गाथा, लोकगीतों और लोककथाओं में सुनने को मिलती है। वर्ष 1853-54 से ही इस विद्रोह की आग छिटपुट आरंभ हो गई थी लेकिन 30 जून, 1855 को इस विद्रोह ने विकराल रूप धारण कर लिया।

ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में वाणिज्य व्यापार के लिए आने के पहले भारत के लोग अपने-अपने क्षेत्र में रहकर अपने व्यवसाय और कृषि से उपार्जन करके जीवन यापन करते थे। दूसरे आदिवासी के तरह ही संथाल आदिवासी भी काम में बहुत कर्मठ थे। अपने क्षेत्रों में पहाड़, पठार, गड्ढा, जंगल काट कर खेती लायक खेत बनाना और कृषि कार्य में लगे रहते थे। शांतिपूर्वक जीवन यापन करते और अपने सुव्यवस्थित समाज में साथ रहकर एक-दूसरे की मदद करते थे।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यवसाय के नाम पर धीरे -धीरे पैर पसारने शुरू कर दिए और देखते-देखते पूरा देश अपने कब्जा में कर लिया। संथाल परगना के संथाल आदिवासी बहुल क्षेत्र को अंग्रेजों ने 'दामिन-ए-कोह' नाम से घोषित किया था। धीरे-धीरे इस क्षेत्र में बाहर से दूसरे समुदाय के लोग आकर बसने लगे तथा इनमें से कई जमींदारों, सूदखोरों और महाजनों ने संथालों पर घोर अत्याचार करना शुरू कर दिया। बर्बरता के सब सीमाओं को लांघते हुए ये महिलाओं पर बुरी नजर और उनके शोषण में भी पीछे नहीं हटे। संथाल आदिवासियों के अलावा उस इलाके में रह रहे छोटे-छोटे दूसरे समुदाय के लोगों को भी इस प्रकार की पीड़ा सहनी पड़ रही थी। ये लोग जब जमींदारों, सूदखोरों और महाजनों के अत्याचार के विरुद्ध शिकायत करने जाते थे तो अंग्रेज शासक उल्टा इनको ही दोषी बना देते तथा महाजनों, सूदखोरों और जमींदारों का भरपूर साथ देते थे। दामिन-ए-कोह के क्षेत्र में संथालों द्वारा बनाए गए खेतों को अंग्रेजी शासन, बहार से आए हुए अन्य समुदायों में जबरन वितरित कर दिया करते थे एवं लगान संबंधी नए-नए कानून लाते थे। इस तरह से स्थानीय संथालों का जीना हराम हो गया था। इसके अलावा अंग्रेज़ सरकार ने अपनी कूटनीति के तहत कोलकाता से संथाल परगना तक रेल लाइन बिछानी शुरू कर दी तथा रेल लाइनों को बिछाए जाने के रास्ते में जो भी जमीनें आई, उन समस्त जमीन को बिना मुआवजा दिए जबरन हड़प लिया गया। संथालों की हजारों एकड़ जमीन छीन ली गई और रेल लाइनों में मजदूरी करने हेतु इन लोगों को बेगारी के लिए जबरन कोलकाता भेजा जाने लगा। यह सब भगनाडीह गाँव के चुनू मुर्मू के सपूतों से देखा न गया।

संथाल समाज में सामाजिक व्यवस्था के तहत गाँव के मुखिया को माझी कहा जाता है। लोग अपने दुख-दर्द माझी को बताते हैं और माझी के नेतृत्व में सभी गाँववासी मिलकर किसी समस्या का समाधान करने की कोशिश करते हैं लेकिन यह तो किसी एक गाँव की समस्या नहीं थी और माझी के अधीन का भी नहीं था इसलिए भगनाडीह गाँव के चुनू मुर्मू के वीर सपूतों सिदो मुर्मू, कान्हू मुर्मु, चाँद मुर्मु और भैरव मुर्मू ने ठान लिया कि आगे अत्याचार नहीं सहेंगे, हमें आगे आना ही पड़ेगा। संथालों में अपने सामाजिक प्रथा के तहत

किसी सामाजिक या सामुदायिक या संगठनात्मक कार्यक्रम के लिए विराट जनसभा हेतु लोगों को इकट्ठा करने के लिए 'सारजोम गिरा' संदेश भेजने का एक प्रथा है। इसमें साल (सखुआ) पेड़ के छोटे-छोटे डाली को तोड़कर संदेश भेजने वाले का प्रमुख या मुखिया, संथालों के देवी-देवताओं से प्रार्थना करके आज्ञा मांगकर, जनसभा के लिए जगह और दिनांक तय करता है तथा संदेश के साथ डालियों को चारों दिशाओं में भेज दिया जाता है। एक गाँव से दूसरे, तीसरे इस तरह से हवा की तरह संदेश चारों तरफ फैल जाता है। उस वक्त भी सिदो-कान्हू ने 'सारजोम गिरा' के द्वारा संदेश भेजा कि अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध एकजुट होने के लिए सभी लोग भगनाडीह गाँव के मैदान में 30 जून को एकत्रित होने का कष्ट करें। संदेश पाते ही लोग अपने-अपने अस्त्रों जैसे तीर-धनुष, भाला, बरछा, तलवार, नगाड़ा, सिंगार साकवा (जंगली भैंस के सिंग से बना निर्मित) व अन्य पारंपरिक अस्त्रों के साथ भगनाडीह गाँव के मैदान में 30 जून, 1855 को एकत्रित हो गए। सटिक संख्या बताना तो मुश्किल है फिर भी अनुमान लगाया गया था कि इसमें बीस हजार से भी ज्यादा लोग एकत्रित हुए थे। उस समय बीरभूम, बांकुड़ा, छोटा नागपुर, हजारीबाग और भी दूर-दूर से भी लोग इसमें शामिल हुए थे।

ज्योत्सना रात में भगनाडीह गाँव का मैदान जन-समूह से भरा हुआ था। चारों भाई सामने आए, संथालों के देवी-देवताओं को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया फिर सिदो-कान्हू ने सभा को संबोधित किया। आगे सिदो मुर्मू ने अपने भाषण में कहा "उन्हें भगवान मारांग बोरो का आदेश प्राप्त हुआ है कि अब हम पर होने वाले अत्याचारों को सहन नहीं करना है, उसके खिलाफ संघर्ष के लिए एकजुट होकर आगे आना होगा।" भाषण पूरी भी नहीं हुआ था कि एकजुट हुए लोगों ने एक स्वर में कहा "हम शपथ लेते हैं कि हम अब जमींदार, महाजन, अंग्रेजी शासकों, पुलिस, मजिस्ट्रेट का अन्याय व अत्याचार बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसके लिए चाहे हमें बलिदान भी देना पड़े, हम सब एकजुट होकर आगे बढ़ेंगे। सभी की सहमति से वही पर आगे की रूपरेखा तैयार की गई। सिदो मुर्मू और कान्हू मुर्मू को नेता बनाया गया। अलग-अलग टुकड़ियां भी बनाई गई, सबके लिए दो-दो नेता चुने गए जिसमें गाँव के माझी और साथ में परायनिक को रखा गया। सभा में यह तय किया गया कि सबसे पहले हम प्रशासन के अधिकारियों को पत्र लिखकर हम पर हो रहे अत्याचारों के बारे में अवगत करायेंगे। महाजनों द्वारा हो रहे भ्रष्टाचार, लूट-पाट और छल कपट की पुलिस के पास शिकायत करेंगे। हमारी शिकायतों को कोई न सुने तो हम कोलकाता जा कर वहाँ बैठे उच्च पदाधिकारी से मिलने का आग्रह करेंगे। इसके बाद भी हमारी बातों को नहीं सुना जायेगा तो हम 'हुल' के लिए तैयार रहेंगे और उसी वक़्त कोलकाता अभियान के लिए समय भी तय किया गया।

तय कार्यक्रम के अनुसार सबसे पहले भागलपुर के कमिश्नर, कलक्टर, मजिस्ट्रेट और कुछ जमींदारों को पत्र लिखा गया। दारोगा और जमींदारों से पंद्रह दिनों के अंदर उत्तर देने की मांग की गई लेकिन परिणाम कुछ और ही आया। अंग्रेजी प्रशासन ने महाजनों, सूदखोरों और जमींदारों का ही पक्ष लिया। इससे संथालों और उस क्षेत्रों में रह रहे छोटी-छोटी जातियों पर अत्याचार और तेज होने लगा। उस वक़्त उस क्षेत्रों की कानून व्यवस्था महेश नाम के दारोगा के हाथ में थी जो पूरी तरह महाजनों, सूदखोरों व जमींदारों का साथ दे रहा था और संथालों के साथ बहुत ही बेदर्दी से पेश आता था। संथालों को बिना कारण जेल में डाल दिया जाता था। महिलाओं के ऊपर अत्याचार दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा था।

विद्रोही, महेश दारोगा को दबोचने के लिए मौके की तलाश कर ही रहे थे कि कोलकाता मार्च के दौरान विद्रोहियों की मुठभेड़ आमरापाड़ा के केनाराम भगत से हुई, महेश दारोगा के मिलकर उसने गोरभू माँझी तथा हरमा माँझी की गिरफ्तारी की थी। सिदो-कान्हू के साथ विद्रोहियों ने उन्हें छोड़ देने को कहा। केनाराम और दारोगा को उनकी शक्ति का तनिक भी अंदाजा नहीं था। विद्रोहियों ने बंदियों को जबरन छुड़ा लिया। इस पर भी दारोगा नहीं माना और वह सिदो-कान्हू पर सरकारी काम में अड़ंगा लगाने का आरोप लगाकर उनकी गिरफ्तार के लिए प्रयास करने लगा। आखिरकार संथालों के भीतर धधकती ज्वाला फूट पड़ी। अचानक गोरभू मांझी ने एक कुल्हाड़ी उठाई और केनाराम पर घातक वार करते हुए उसे मार डाला। उसके बाद महेश दारोगा को भी मार डाला गया। देखते ही देखते आसपास उपस्थित महेश दारोगा के लोगों को एक के बाद एक करके मार दिया गया। इस तरह से शांतिपूर्ण ढंग से आरंभ हुए विद्रोह ने एक खूनी संघर्ष का रूप धारण कर लिया था।

कुछ ही समय में यह खबर आग की तरह चारों तरफ फैल गया। विद्रोही हुल- हुल का नारा लगाते हुए जमींदारों और महाजनों पर टूट पड़े। लूटपाट, आगजनी और जो भी इनके रास्ते में आए, सबको

मार गिराया गया लेकिन महिलाओं, बुजुर्ग और बच्चों को विद्रोहियों ने कुछ भी नहीं किया। संथालों ने पाकुड़ के राजमहल पर धावा बोला और उसे अपने अधीन कर लिया। संथाल परगना से सटे बंगाल प्रांत के कुछ हिस्से बांकुड़ा, बीरभूम, मुर्शिदाबाद के विशाल अंचलों पर संथालों ने अपना अधिकार कायम कर लिया और दिन-रात, अविराम गति से अपनी विजय पताका लहराते हुए 'हुल- हुल' का नारा बुलंद करते हुए पूरे उत्साह से आगे बढ़ते रहे। शुरुआत में तो उस इलाके में अंग्रेज सरकार के तैनात अधिकारियों ने संथाल हुल या विद्रोह को बहुत ही हल्के में लिया। जब अंग्रेज फौज के साथ हुल विद्रोहियों का मुठभेड़ हुआ तो उन्होंने तीर-धनुष से ही अंग्रेज फौज को मार गिराया गया। कुछ जगहों में तो लेफ्टिनेंट और ब्रिगेडियर स्तर के अधिकारी भी घायल हो गए। इसके बाद भागलपुर के कमिश्नर ने विद्रोहियों को कुचलने के लिए मोर्चा संभाला। बहरमपुर, बैरकपुर एवं दानापुर से सेना बुलाई गई। दुर्गम इलाकों में विद्रोहियों से सामना करने के लिए हाथियों का भी उपयोग किया गया।

इस विद्रोह का दमन करने के लिए अंग्रेज शासकों ने चारों तरफ से सैनिक इकट्ठा किए। तोपें और सैकड़ों हाथी लाए गए। मार्शल लॉ लागू किया गया लेकिन दूसरी तरफ संथाल विद्रोहियों के पास वही पारंपरिक हथियार तीर-धनुष, बरछे-भाले, तलवार ही थे। अंग्रेजों के तोपों के सामने हजारों संथाल विद्रोही शहीद होते जा रहे थे फिर भी उन्होंने आत्मसमर्पण नहीं किया। जब तक नगाड़े की आवाज बजती रही, वे लहू-लुहान होकर भी तीर-धनुष हाथ में लिए आखिरी सांस तक लड़ते रहे। संथालों के गाँवों में आग लगा दी गई, शीर्ष नेताओं को पकड़ लिया गया। चाँद-भैरव भागलपुर के पास युद्ध करते-करते शहीद हो गए जबकि सिदो मुर्मू को साहिबगंज जिला के बरहेट प्रखण्ड के पंचकोठिया स्थित एक बरगद के पेड़ पर 26 जुलाई, 1856 को फांसी पर लटका दिया था। कान्हू मुर्मु को भगनाडीह में फांसी दी गई। इस तरह 13 माह तक विद्रोह की आग जलती रही। संथाल विद्रोह में महिलाएं भी शामिल हुई थी जिसमें चुनु मुर्मु के दो बेटियां फुलो और झानो भी शामिल थी।

संथाल विद्रोह (संथाल हुल) की लड़ाई भले ही इतिहास के पन्नों में सिमटकर रह गई हो परंतु उन वीरों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। इसी विद्रोह के फलस्वरूप 'दामिन-ए-कोह' का पहाड़ी क्षेत्र संथाल परगना के नाम से अस्तित्व में आया तथा भारत में जनजातीय भूमि अधिकारों और सांस्कृतिक स्वायत्तता के संरक्षण के लिए संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम व छोटा नागपुर काश्तकारी अधिनियम भी बनाया गया।

-सेवानिवृत्त प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

संदर्भ :

1. आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह, संपादक- रमणिका गुप्ता।
2. संताल हुल, संपादक- हरिवंश, फैसल अनुराग।
3. सिदो और कान्हू, संपादक- जगन्नाथ दास, संजीव कुमार।

कार्टून कोना

प्रदीप कुमार रॉय
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

आंचलिक कार्यालयों में स्थापना दिवस समारोह 2025

आंचलिक कार्यालयों में बैंक का 118वाँ स्थापना दिवस अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आंचलिक कार्यालयों द्वारा लंगर वितरित किया गया तथा बैंक कार्मिकों द्वारा रक्तदान किया गया। अनेक कार्यालयों में पौधारोपण भी किया गया।

आंचलिक कार्यालय कोलकाता

आंचलिक कार्यालय पटियाला

आंचलिक कार्यालय जालंधर

आंचलिक कार्यालय लुधियाना

आंचलिक कार्यालय पंचकूला

आंचलिक कार्यालय लखनऊ

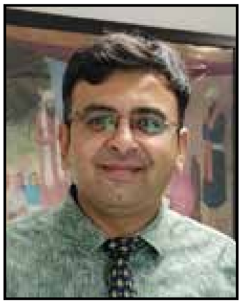

भारत में वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक)

पुलकित रॉय

फिनटेक 'फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी' का संक्षिप्त रूप है। वित्तीय कार्यों में प्रौद्योगिकी के उपयोग को फिनटेक कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह पारंपरिक वित्तीय सेवाओं और विभिन्न कंपनियों तथा व्यापार में वित्तीय पहलुओं के प्रबंधन हेतु आधुनिक तकनीक का कार्यान्वयन है। फिनटेक शब्द का प्रयोग उन नई तकनीकों के संदर्भ में किया जाता है जिनके माध्यम से वित्तीय सेवाओं में प्रयोग, सुधार और स्वायत्तता लाने का प्रयास किया जाता है।

सैलफोर्ड बिजनेस स्कूल ने फिनटेक को परिभाषित करते हुए कहा है कि फिनटेक विश्व वित्त का ऐसा बिंदु है जिसने प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र और विनियमन तीनों को एक साथ लाकर खड़ा कर दिया गया है। आज के तकनीकी नवाचार के इस दौर में भारत विश्व के अग्रणी डिजिटल भुगतान एवं उपयोगकर्ता देश के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। यदि भारत में फिनटेक कंपनियों का वर्गीकरण करें तो हमें फिनटेक भुगतान, फिनटेक खुदरा बैंकिंग, फिनटेक उधारदाता, फिनटेक बीमा, फिनटेक धन प्रबंधन, फिनटेक निवेश प्रबंधन, फिनटेक क्रिप्टोकरेंसी, फिनटेक क्राउडफंडिंग, फिनटेक नियो बैंक इत्यादि कंपनियां मिलेंगी। इनकी सेवाओं के दायरे में पारंपरिक बैंकिंग, बीमा आदि गतिविधियों से लेकर अन्य प्रकार की वित्तीय सेवाएं शामिल हैं लेकिन तकनीक के विकास के साथ-साथ अब इन सभी सेवाओं को आप घर बैठे अपने मोबाइल/ कंप्यूटर आदि के माध्यम से किसी भी डिवाइस पर प्राप्त कर सकते हैं। यह सब वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) की बदौलत ही संभव हो पाया है।

हाल ही में चीन को पीछे छोड़ते हुए भारत एशिया में फिनटेक के सबसे बड़े बाज़ार के रूप में उभरा है। अमेरिका के बाद भारत विश्व के दूसरे सबसे बड़े फिनटेक हब के रूप में विश्व पटल पर उभरा है। इंफोसिस के बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और बीमा प्रमुख मोहित जोशी ने इसकी भविष्यवाणी कुछ वर्ष पहले ही कर दी थी। उन्होंने कहा था कि फिनटेक का सूरज पूर्व में उगता है और एशिया इसका नया केंद्र है। फिनटेक की गति अब दुनिया के इस हिस्से (एशिया) में स्थानांतरित हो गई है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद भारत अधिकतम निवेश आकर्षित करने वाला देश बन गया है। एशिया के चार देश विशेष रूप से चीन, जापान, कोरिया के साथ भारत फिनटेक नवाचार में दुनिया का नेतृत्व कर रहा हैं। इसको समझने के लिए एक ही उदाहरण काफी है कि फिनटेक पेटेंट के लिए भारत, विश्व के सबसे अग्रणी स्थान पर पहुँच गया है। एशिया के देश खासकर भारत में फिनटेक उछाल के पीछे महत्वपूर्ण कारण देखें तो अनुकूल बाज़ार स्थितियां, युवा डिजिटल आबादी की उपस्थिति, इंटरनेट और तकनीक की सर्वसुलभ उपलब्धता रही है। दक्षिण पूर्व एशिया में बड़ी संख्या में बैंक रहित आबादी जो फिनटेक उत्पादों का उपयोग करने की इच्छुक है, दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ते फिनटेक बाजारों में से एक का निर्माण कर रही है।

फिनटेक नवाचार सिर्फ बैंकिंग क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। बीमा कंपनियां, बीमा दावों के निपटान में तेजी लाने के लिए मशीन लर्निंग की ओर रूख करने जा रही हैं। जिस फिनटेक उद्योग को हम आज जानते हैं, वह नब्बे के दशक के अंत और बीसवीं शताब्दी की शुरुआत से पहले अस्तित्व में नहीं था। 20वीं सदी के उत्तरार्ध और उसके बाद फिनटेक के विस्तार और विकास के लिए मंच तैयार किया गया जिनको इस चार्ट के माध्यम से समझा जा सकता है

90 के दशक के अंत और 2000 के दशक के आरंभ में	इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग, ऑनलाइन स्टॉक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म
वर्ष 2005-2010	मोबाइल भुगतान, पी2पी ऋण देने वाले प्लेटफार्म
वर्ष 2010-2015	कराउड फंडिंग
वर्ष 2015-2020	डिजिटल बैंकिंग
वर्ष 2020-वर्तमान	डिजिटल मुद्राएं, डिजिटल बीमा, डिजिटल बैंक खाते, डिजिटल प्रतिभूतियां, ऑनलाइन उधार इत्यादि

वैश्विक प्रवृत्ति का अनुकरण करते हुए भारतीय बैंकिंग और वित्तीय उद्योग ने 2000 के दशक के मध्य से स्टार्टअप या फिनटेक की पैठ देखी है। प्रारंभिक चरण में वर्ष 2005 के आसपास कारोबार प्रतिनिधि (बीसी) की संकल्पना सामने आई जिसका उपयोग ग्रामीण घरों में वित्तीय सेवाओं की पहुंच बढ़ाने के लिए किया गया था। वर्ष 2010 में मोबाइल वॉलेट में भुगतान स्टार्टअप का उदय हुआ। 2014 और 2016 के बीच निवेश या फंडिंग गतिविधि में 40% की वृद्धि के साथ गहरी रुचि दिखाने के साथ फिनटेक ने और भी अधिक सफलता हासिल की है। बैंकिंग प्रौद्योगिकी स्टार्टअप अभी भी शुरुआती चरण में हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 (भारत सरकार) में कहा गया है कि फिनटेक उद्योग की वैश्विक वृद्धि दर 23% की है, वहीं भारतीय फिनटेक उद्योग बाजार 87% की दर से बढ़ रहा है।

वर्तमान समय में फिनटेक व्यापार वृद्धि और रोज़गार सृजन दोनों मामलों में देश का सबसे तेजी से उभरता क्षेत्र है। फिनटेक वित्तीय प्रणाली में पारदर्शिता लाने के साथ-साथ वित्तीय समायोजन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो सकता है। वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) का उपयोग उपभोक्ता के लिए सुगमतापूर्वक वित्तीय सेवाएं (भुगतान करने, प्राप्त करने आदि) प्रदान करने के लिए किया जाता है। इस क्षेत्र में लगातार हो रहे नवोन्मेषिता के कारण इस नई तकनीक के जरिए वित्तीय सेवाओं को सुरक्षित एवं तेज गति से उपभोक्ताओं तक पहुंचाने में मदद मिलती है। इसके लिए फिनटेक कंपनियां कई तरह के सॉफ्टवेयर/ एप्लीकेशन और एल्गोरिदम का उपयोग कर इस प्लैटफ़ार्म को सुलभ और सुरक्षित बना रही हैं। साथ ही वित्तीय समावेशन की दिशा में भी इनका पहल उल्लेखनीय है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के माध्यम से पिछले दस वर्षों में ₹35 लाख करोड़ लाभार्थियों तक पहुंचाया गया है। फिनटेक स्टार्टअप द्वारा आसान और त्वरित ऋण उपलब्ध कराए जाने पर एमएसएमई क्षेत्र में ऋण आबंटन को आसान और सुलभ बनाया जा सकता है जिससे ग्राहकों/ उपभोक्ता को कई बार बैंक जाने तथा इसकी जटिल कागज़ी प्रक्रिया से राहत मिल सकेगी।

भारत में वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) के आने के बाद उपभोक्ताओं को बेहतर अवसर की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। ज्ञात है कि फिनटेक उत्पादों को ऑनलाइन माध्यम से वितरित किया जाता है इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उन तक पहुंच आसान और तेज होती है। आज के संचार क्रांति के दौर में तेज गति से वित्तीय सेवाओं के उपलब्धता के कारण देश के सभी वर्गों में फिनटेक कंपनियों द्वारा दिए जाने वाले सुविधाओं को तेजी से स्वीकार कर रहा है। उपभोक्ताओं को अपने पसंद की सेवाओं और उत्पादों का लाभ घर बैठे भौगोलिक दूरी और स्थान की परवाह किए बिना सुदूर देश-प्रदेश से खरीदा जा सकता है।

आर्थिक विकास के साथ देश में मध्यम वर्ग का तेजी से विस्तार हो रहा है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 तक भारत की मध्यम वर्गीय आबादी में 140 मिलियन अर्थात 14 करोड़ नए परिवार और उच्च-आय वर्ग की आबादी में 21 मिलियन नए अर्थात 21 करोड़ परिवार जुड़ जाएंगे जो देश के फिनटेक बाज़ार में मांग और विकास को गति प्रदान करेंगे। प्रौद्योगिकी, फिनटेक कंपनियों को ग्राहकों के बारे में अधिक जानकारी एकत्र करने और संग्रहीत करने की अनुमति देती है ताकि वे उपभोक्ताओं को अधिक व्यक्तिगत उत्पाद या सेवाएं प्रदान करने में सक्षम हो सकें।

इन कंपनियों के माध्यम से व्यापक वित्तीय समावेशन के लक्ष्य तक पहुंचने में आसानी होगी। आजादी के छ: दशकों बाद भी देश की एक बड़ी आबादी औपचारिक वित्तीय प्रणाली के दायरे से बाहर थी। जनधन खाता खोलने के बाद बैंकों तक देश के समान्य जनों की

पहुंच हुई है। सही अर्थों में वित्तीय समावेशन का उद्देश्य तभी पूर्ण होगा जब देश के जन-जन तक बीमा और वित्तीय उधार (ऋण) की सेवाएं पहुंच सके। अधिकांश फिनटेक कंपनियां वर्तमान समय में खुदरा ऋण ही आबंटित कर रही है। इसे बढ़ाकर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों तक लेकर जाना है। इस वित्तीय प्रौद्योगिक कंपनियों के माध्यम से पारंपरिक वित्तीय और बैंकिंग मॉडल में वित्तीय समावेशन से जुड़ी चुनौतियों को दूर किया जा सकता है।

फिनटेक कंपनियों **भाषा संबंधी बाधाओं को पार करके सेवा प्रदान कर रही हैं।** अधिकांश फिनटेक कंपनियों की सेवाएं लगभग 10 से 12 भारतीय भाषा में उपलब्ध है। तकनीक के रूप में अंग्रेजी जैसे रूढ़ हो चुकी भाषा से इतर भारतीय भाषा में फिनटेक कंपनियों द्वारा अपनी सेवा प्रदान करने के कारण उनकी पहुंच सुदूर गाँव तक पहुंची है। ग्रामीण तथा टायर-3 रहने वाले छोटे एवं मध्यम आकार के उपभोक्ताओं तक उनकी भाषा में अपनी सुविधा प्रदान करने के चलते न इन कंपनियों ने वित्तीय उधार की खाई को न केवल पाटने का काम किया है अपितु वित्तीय सेवाओं का सही अर्थों में लोकतांत्रिकरण भी किया है। भाषा आज इन सेवाओं के उपभोग की दृष्टि से बाधक नहीं बल्कि साधक के रूप में काम कर रही है।

फिनटेक कंपनियां, वित्तीय समावेशन के लिए अंतिम मील तक पहुंचने का एक उपकरण बन कर उभरी हैं। कुछ ही वर्षों में देश में फिनटेक कंपनियों की बाढ़ सी आ गई है। भिन्न-भिन्न वित्तीय सेवाओं और उत्पादों के साथ इन कंपनियों ने अपना संजाल पूरे देश में फैला दिया है। वित्तीय समावेशन के दृष्टिकोण से उनका यह पहल काफी सराहनीय है। भारतीय जन-मानस इस सभी बदलावों को खुले मन से स्वीकार कर रहा है। भारतीय रिज़र्व बैंक ने भारतीय अर्थव्यवस्था में वित्तीय प्रौद्योगिक (फिनटेक) को प्रोत्साहित किया है। वित्तीय समावेशन के एजेंडे को आगे बढ़ाने के मद्देनजर उन्होने फिनटेक फर्मों को स्थापित करने की संभावना तलाशने तथा नवोन्मेष के माध्यम इस क्षेत्र को पोषित करने के उद्देश्य से उल्लेखनीय कार्य किया है।

फिनटेक के सुव्यवस्थित विकास को सुनिश्चित हेतु वित्तीय प्रणाली में उनके प्रभाव को सुप्रवाहित करने, ग्राहकों का संरक्षण करने और सभी हितधारकों के हितों की सुरक्षा के लिए समुचित नियामक और पर्यवेक्षी ढांचे की जरूरत थी। फिनटेक और डिजिटल बैंकिंग पर बने रिज़र्व बैंक के कार्यसमूह (फिनटेक और डिजिटल बैंकिंग पर बने रिज़र्व बैंक के कार्यसमूह की रिपोर्ट, 2017) ने इस पर महत्वपूर्ण सुझाव दिया है। साथ ही इन वित्तीय प्रौद्योगिक कंपनियों के द्वारा बिग डेटा की समीक्षा करते हुए तकनीक (मशीन लर्निंग) का सहारा लेकर ऋण जोखिम के निर्धारण हेतु वैकल्पिक डेटा का लाभ उठाया जा रहा है। इसके मद्देनजर सीमित क्रेडिट इतिहास वाले ग्राहकों के लिए क्रेडिट स्कोर विकसित कर देश में वित्तीय सेवाओं की पहुंच उन लोगों तक पहुंचाने का कार्य प्रारंभ किया जा चुका है जिससे वंचित वर्ग जिनका क्रेडिट इतिहास नहीं होने के कारण ऋण आदि उपलब्ध नहीं हो पा रहा था, को ऋण उपलब्ध करवाते हुए वित्तीय समावेशन में सहायता प्राप्त होगी।

भारतीय फिनटेक उद्योग का विस्तार काफी तेजी से हो रहा है। एक अनुमान के अनुसार साल 2030 तक इसका बाज़ार लगभग 20 बिलियन डॉलर यानी करीब ₹1.66 लाख करोड़ होने का अनुमान है। वैश्विक स्तर इस क्षेत्र के विकास दर की तुलना करें तो हम देखते है कि भारत में फिनटेक उद्योग की वृद्धि दर वैश्विक स्तर से लगभग तीन गुने के बराबर है। देश में जनसंख्या का वर्गीकरण करके देखते तो डिजिटल और वित्तीय रूप से साक्षर आबादी काफी कम है। वित्तीय उत्पादों और सेवाओं का वर्तमान लाभ भारतीयों के विशाल जनसंख्या की आवश्यकता और अपेक्षा को पूरा नहीं करता है।

भारत जैसे विशाल देश में फिनटेक कंपनियां अपने व्यवसाय में छोटे आकार के खुदरा ऋण, एकल चिकित्सा प्रक्रियाओं के लिए प्रीपेड बीमा योजनाएं, प्वाइंट ऑफ सेल क्रेडिट, बीमा भुगतान, सूक्ष्म निवेश उत्पाद और अन्य को शामिल कर रही है। फिनटेक स्टार्टअप कंपनियां इस सेगमेंट को समझने और ऐसे समाधान तैयार करने के लिए गहराई में जाने के बाद सभी उम्र और वर्गों हेतु उत्पाद तैयार कर सकते है अर्थात् भारतीय अर्थव्यवस्था की तरह भारतीय फिनटेक उद्योग का भविष्य काफी सुनहरा है। आधुनिक परिप्रेक्ष में यही समीचीन है कि हमें वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) के साथ जीने की आदत शुरू कर देनी चाहिए। इसमें चुनौतियां भी है और अनंत अवसर भी सामहित है।

-स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज
रोहिणी, दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति का विचार-विमर्श कार्यक्रम

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा 10 जून, 2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अलीगढ़ के सदस्य कार्यालय के रूप में बैंक की शाखा अलीगढ़ का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। उक्त निरीक्षण कार्यक्रम में बैंक की ओर से शाखा प्रभारी अलीगढ़ श्री अरविन्द पाठक तथा आंचलिक कार्यालय आगरा में पदस्थ राजभाषा अधिकारी श्री रूप कुमार उपस्थित रहे।

पीएसबी
ई-अपना घर
मिनटों में ऋण, जीवन भर के लिए घर
सुविधा का लाभ प्राप्त करने के लिए यहाँ स्कैन करें।

पीएसबी
ई-अपना वाहन
गति और सुविधा का मेल
सुविधा का लाभ प्राप्त करने के लिए यहाँ स्कैन करें।

आपका विश्वास ही हमारी विरासत को समृद्ध करता है

1908 से

पी.एस.बी
मना रहा है

118 वां

स्थापना दिवस

24 जून, 2025

पीएसबी
ई-अपना वाहन

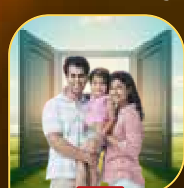
पीएसबी
ई-अपना घर

पीएसबी
यूनिक ब्रिज
कारपोरेट डिजिटल बैंकिंग
सरल, सुरक्षित और तेज

पीएसबी
444 डेज़ एफडी

बैंकिंग में उत्कृष्टता और नवोन्मेष के साथ एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।

हमारे सभी ग्राहकों, हितधारकों और शुभचिंतकों का निरंतर सहयोग के लिए हार्दिक आभार !

GET IT ON Google Play
पीएसबी यूनिक
डाउनलोड के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

Available on the App Store
पीएसबी यूनिक
डाउनलोड के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

*नियम व शर्तें लागू

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

पी.एस.बी

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन–ध्येय है

वेबसाइट : https://punjabandsindbank.co.in | ईमेल : ho.customerexcellence@psb.co.in

1800 419 8300 (टोल फ्री) | हमें फॉलो करें @PSBIndOfficial